ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -14 अंक - 11 सितम्बर-I, 2013 (पाक्षिक) माउण्ट आबू मूल्य 7.50 रु.

प्रेम व सहानुभूति पूर्ण भाषा का करें उपयोग

भोड़ाकला (ओ.आर.सी.)। केवल हमारे कहने मात्र से लोग परिवर्तित नहीं हो जाएंगे। हम जैसा दूसरों से करने के लिए कहते हैं तो पहले हमें स्वयं वैसा आचरण करके दिखाना होगा। ऐसा करने पर ही हमारी कही हुई बातों का दूसरों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा और लोग परिवर्तित होंगे। अगर हम किसी व्यक्ति विशेष अथवा आस-पास के लोगों में बदलाव लाना चाहते हैं तो हमें उनके साथ प्रेम एवं सहानुभूतिपूर्वक वार्ता करनी होगी, उनकी भावनाओं का सम्मान करना होगा। हमें उनकी बातों को भी धैर्यपूर्वक सुनना होगा।

देश के 500 से भी ज्यादा चिकित्सकों को ब्र.कु.शिवानी राजयोग का महत्व समझाते हुए

उक्त विचार अंतर्राष्ट्रीय राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु.शिवानी ने ब्रह्माकुमारीज़ ओम शान्ति रिट्रीट सेन्टर परिसर में 'होप, हैप्पीनेस एण्ड हीलिंग' विषय पर आयोजित सेमिनार में दिल्ली, हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश के विभिन्न शहरों से आए 500 से भी अधिक चिकित्सकों को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होने कहा कि जब हम दूसरों के साथ प्रेम एवं सहानुभूति के साथ बात करेंगे तो स्वयं उनके मन में हमारे प्रति श्रेष्ठ भावनाएं उत्पन्न होंगी। इस प्रकार से उनके अन्दर अपने आप परिवर्तन आएगा और यह एक सच्चा और अच्छा परिवर्तन होगा। संक्षेप में केवल सैद्धान्तिक बातें करने मात्र से लोगों पर उसका असर नहीं होता है बल्कि हमें उसे प्रयोगात्मक रुप से करके दिखाना होगा। चिकित्सकों को जीवन दाता कहा जाता है। उन्हें भगवान के बराबर दर्जा दिया जाता है। मानव जीवन को विभिन्न प्रकार के शारीरिक रोगों व मानसिक तनाव से दूर रखने में चिकित्सकों की अहम भूमिका होती है। लेकिन वर्तमान युग में अत्यधिक व्यस्तता के कारण चिकित्सकों को स्वयं मानसिक तनाव की स्थिति का सामना करना पड़ता है। चिकित्सकों को इस मानसिक तनाव से दूर रखने में राजयोग का नियमित अभ्यास लाभदायक सिद्ध हो सकता है।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ.माधुरी बिहारी, हेड ऑफ दि डिपार्टमेन्ट न्यूरोलॉजी एम्स ने राजयोग के लाभ के बारे में अपना अनुभव बताते हुए कहा कि मैं पिछले एक वर्ष से राजयोग का नियमित अभ्यास कर

-शेष पेज 10 पर..

दुनिया को बनाना है एक ईश्वरीय परिवार

श्रेष्ठ संसार का आधार -श्रेष्ठ संकल्प, मानव जीवन के लिए सर्वश्रेष्ठ ज्ञान, वर्तमान समस्याओं का समाधान, सर्व धर्म मान्य -परमशक्ति,जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर किया संतों-महात्माओं ने विमर्श।

ज्ञान सरोवर। परमधाम आश्रम अमरावती से पधारे स्वामी शास्वतानंद जी महाराज ने ब्रह्माकुमारीज धार्मिक सेवा प्रभाग द्वारा 'एक ईश्वर -एक ईश्वरीय परिवार' विषय पर आयोजित अखिल भारतीय सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि इस अलौकिक आयोजन को देखते हुए हृदय गदगद हो रहा है। संसार को देखने की हमारी जो दृष्टि है हमें उसे सुधारना है। ईश्वर एक है, नाम उनके अलग-अलग हैं। इस ज्ञानसरोवर के ज्ञान में गोता लगाकर हम अपने अंदर के अंधकार को दूर करके उस परम सत्य का अनुभव कर सकेंगे। इस दुनिया को एक ईश्वरीय परिवार बना सकेंगे।

हरिद्वार से पधारे महामंडलेश्वर त्यागमूर्ति दर्शन सिंह जी महाराज ने कहा कर्मों के अनुसार हम अपना प्रालब्ध प्राप्त करते हैं। एक नूर ते सब जग उपज्या। सबका पिता वाही परमपिता है। इस संस्थान का तो कोई मुकाबला नहीं है। इसकी सफलता हर दिशा में फैल रही है। इनकी पद्धति अनूठी है। इनकी शिक्षाओं को आत्मसात करें।

ज्ञानसरोवर। स्वामी शास्वतानंद जी महाराज, अब्दुल अजीज जी, दादी रतनमोहिनी, महामण्डलेश्वर दर्शनसिंह त्यागमूर्ति, बसवमूर्ति स्वामी, ब्र.कु.मनोरमा, ब्र.कु.रामनाथ तथा अन्य उद्घाटन करते हुए।

वलसाड से पधारे भाई अब्दुल अजीज जी ने कहा कि ईश्वर अल्लाह एक है। मात्र अल्लाह ही पूजा के लायक है। परमात्मा कृपालु एवं दयालु है। हमारे बदन में पहुँचकर चीजें बदबूदार हो जाती हैं। शरीर अशुद्ध है मगर हमारी आत्माएं पावन हैं। वह अल्लाह सभी विशेषताओं से सम्पन्न है बाकी कोई नहीं। हम सभी उन्हीं की संतान हैं। हमें प्रेम से मिलजुल कर रहना है।

ब्रह्माकुमारीज संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने कहा कि हमारे कल्याणकारी परमपिता परमात्मा की आप सभी -शेष पेज 4 पर..

विश्व कल्याण का चिन्तन ही भारतीय संस्कृति की महानता

आबू पर्वत। मध्यप्रदेश के लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री महेन्द्र हरदिया ने ब्रह्माकुमारीज मेडिकल विंग द्वारा 'माइण्ड बॉडी मेडिसीन' विषय पर आयोजित अखिल भारतीय चिकित्सक सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए कहा कि यहाँ आते ही मुझे उस मानसिक शांति की अनुभूति हुई जिसे आज दुनियाँ तलाश कर रही है। हमारी संस्कृति की महानता ही यह है कि वह विश्व के कल्याण का चिंतन करती रहती है। चिकित्सकों को अपने लिए वक्त नहीं मिलता है लेकिन अपना कल्याण किये बिना वे दूसरों का हित नहीं साध पाएंगे। अत: पहले उन्हें अपने बारे में भी विचार करना होगा। काम के बोझ को कम करके आप खुद को अधिक उपयोगी बना पाएंगे। अपने व्यवसाय में सिम्पैथी का पुट अवश्य डालें। यह अभी समाप्त सा हो गया है। यहाँ से ध्यान का बल प्राप्त करके आप यह कर पाएंगे। मेरा विश्वास है कि इस सम्मेलन से आप सभी को काफी लाभ प्राप्त होगा।

ब्रह्माकुमारीज संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने कहा कि हमें सदैव यह याद रहे कि इस शरीर के द्वारा बातचीत करने वाली शक्ति मैं आत्मा ही हूँ। मगर हमने इसे भुला दिया है। इसीलिये आज हर कोई बीमार है और कोई न कोई दवा का सहारा उन्हें लेना पड़ रहा है। प्राचीन समय में लोग इतने बीमार नहीं थे क्योंकि वे इतने देहाभिमानी न थे। देह से आत्मा की ओर की यात्रा हमें बीमारी से छुटकारा दिलाएगी। राजयोग के अभ्यास से हमें बीमारियों एवं अन्य समस्याओं से मुक्ति मिलेगी।

ब्रह्माकुमारीज मेडिकल विंग के अध्यक्ष डॉ अशोक मेहता ने कहा कि यहाँ का माहौल -शेष पेज 8 पर..

आबू पर्वत। दादी रतनमोहिनी कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए। मंचासीन हैं मध्यप्रदेश के लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री महेन्द्र हरदिया, ब्र.कु.अशोक मेहता तथा अन्य।

हमारा सूक्ष्म शरीर भी कार्य करता है...

जो कर्म हम करते जा रहे हैं, वे तमाम हमारे भीतर अवचेतन मन पर गहरी छाप छोड़ते हैं। चेतना में हो रही इसी प्रक्रिया से हमारा सूक्ष्म शरीर तैयार होता है और कई बार स्थूल शरीर से ज्यादा सूक्ष्म शरीर कार्य पूरा कर सकता है। हमने सुना है कि कई बार सूक्ष्म शरीर के द्वारा दूसरों को हील भी किया जाता है। ऐसी ही ऐसी ही कुछ घटनाओं का उल्लेख डॉ.थेल्मा ने अपने संसोधन ग्रंथ में किया है।

न्यूयार्क के प्रोफेसर वैज्ञानिक डॉ.थेल्मा मोस और डॉ. मार्गरेट आर्मस्ट्रोन्ग ने उनके प्रयोग के द्वारा साबित किया कि व्यक्ति का सूक्ष्म शरीर उसके स्थूल शरीर से अलग हो सकता है और पल भर में हज़ारों माईल्स दूर जा सकता है। डॉ. थेल्मा मोस ने उनके संशोधन ग्रंथ में ऐसी अनेक घटनाओं का उल्लेख किया है। उनमें से एक घटना 1908 में हुई थी। ब्रिटेन के

- ब्र.कु.गंगाधर

'हाउस ऑफ लॉर्डस' का अधिवेशन चल रहा था। इस अधिवेशन में विरोधी-पक्ष ने सरकार के विरूद्ध अविश्वास प्रस्ताव रखा था और उस दिन प्रस्ताव पर मतदान होने वाला था। विरोधी-पक्ष मजबूत था इसलिए सरकार को बचाने के लिए सत्ता-पक्ष के सभी सांसदों का उस अधिवेशन में हाज़िर होना बहुत ज़रूरी था। लेकिन सत्ता-पक्ष के सदस्य सर कोर्नराश गंभीर बीमारी से ग्रस्त थे। उनकी स्थिति ऐसी नहीं थी कि वे चल-फिर सकें। सबकी ऐसी इच्छा थी कि सर कोर्नराश अधिवेशन में हाज़िर होकर मतदान करें। इसलिए उन्होंने डॉक्टरों से विनती की कि उन्हें मतदान के लिए सदन में जाने दिया जाए। लेकिन रोग की गम्भीरता के कारण डॉक्टर्स भी लाचार थे और वे उनके जीवन को खतरे में डालने को तैयार नहीं थे।

> **सूक्ष्म शरीर से मीलों दूर के भी दु:खी आत्माओं की आवाज़ सुन सकते हैं व उन्हें विकट परिस्थितियों से मुक्ति भी दिला सकते हैं। ये तब संभव होता है जब निरंतर हमारी चेतना की सूक्ष्म शक्तियों को उस दिशा में एकाग्र करने का अभ्यास हो व सूक्ष्म शक्ति मन-बुद्धि, कल्याण व श्रेष्ठ कार्य के प्रति सजग रहती। सत्य स्वरूप में स्थित होने पर रूह को राहत पहुंचती ।**

दूसरी ओर सदन में मतदान के समय अनेक सदस्यों ने देखा कि सर कोर्नराश अपनी कुर्सी पर बैठे हैं और उन्होंने मतदान भी किया। कई सदस्यों ने उनके स्वास्थ्य के संबंध में हालचाल पूछे और पक्ष के हित में मतदान करने के बाद धन्यवाद दिया। फिर थोड़े दिनों के बाद सर कोर्नराश ने अधिवेशन में न पहुंच सकने व अपनी असमर्थता के कारण माफी मांगी तो सभी को आश्चर्य हुआ। उन्होंने कोर्नराश से कहा कि आप तो मतदान करने आये थे न! सभी ने आपको देखा था, आपके साथ बात भी की थी और आपका मत पार्टी के लिए निर्णायक साबित हुआ था। जबकि कोर्नराश को डॉक्टर्स ने बताया कि आप तो बेड से उठे भी नहीं थे क्योंकि आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं था। डॉक्टर्स की निगरानी में ही उनका देख-भाल किया जा रहा था। इसलिए कोई भी उन्हें सदन में ले गया हो ऐसा तो हो ही नहीं सकता। डॉ.थेल्मा मोस बताते हैं कि सर कोर्नराश का स्थूल शरीर तो बेड पर ही था लेकिन उनका सूक्ष्म शरीर मतदान के स्थान पर पहुँच गया था। चेतना (सूक्ष्म शरीर) ने स्थूल शरीर जैसा रूप धारण कर मतदान के महत्वपूर्ण कार्य को पूरा किया।

डॉ.थेल्मा मोस ने ऐसे कई घटनाओं का उल्लेख किया है। एक बार ब्रिटिश कोलंबिया विधान सभा का अधिवेशन चल रहा था। उस समय उनके एक सभा सदस्य चार्ल्स वुड बहुत बीमार थे। उनकी तीव्र इच्छा थी कि वे अधिवेशन में हाज़िर रहें। लेकिन डाक्टर्स ने स्पष्ट रूप से मना कर दिया कि आपके लिए बेड से उठना बहुत ही नुकसानकारक होगा क्योंकि आपकी बीमारी बहुत गम्भीर है। इसलिए आपको बेड से उठने की इजाजत नहीं दे सकते। चार्ल्स वुड सगे-सम्बंधियों, डॉक्टर्स एवं नर्स -शेष पेज 11 पर..

जो मेरे अंदर में होगा वह बाहर एक्ट में जरूर आएगा

हर समय सुबह शाम, रात्रि को सोने के समय भी दिन-रात मैं आत्मा हूँ, यह स्मृति रहे तो ऑटोमेटिक बाबा की याद रहती है क्योंकि परमात्मा ने बताया है कि तुम आत्मा मेरा बच्चा हो, वारिस हो। तो यह स्मृति और अटेन्शन रखने से कार्य-व्यवहार होते हुए भी किसकी कमी कमज़ोरी न देखें, न सुनें, यह परहेज चाहिए क्योंकि यज्ञ सेवा में हर एक निमित्त है, हर एक का पार्ट अपना है। मुझे धुन लगी पड़ी है, अन्दर की मेरी स्थिति में कोई कमी-कमज़ोरी न रहे, अचल-अडोल स्थिति बनें। जैसे बाबा को यह भान है कि यह सब मेरे बच्चे हैं, ऐसे हमको यह भान हो कि मैं आत्मा हूँ, बाबा की हूँ तो सर्वशक्तिवान बाबा से शक्ति आती है। वो शक्ति फिर मुझे हर समय साथ देती है तब कहते हैं, इस रूप में बाबा हमारे साथ है, कम्बाइण्ड है। जब सर्वशक्तिवान का साथ है तो जीवन यात्रा में कोई बात रोक नहीं सकती। जीवन यात्रा में मैं कभी रूकती नहीं हूँ। रूकने से, देखने से, सुनने से, सोचने से जो टाइम वेस्ट होता है ना, उसका दु:ख होता है। बात का दु:ख नहीं होता है, लेकिन अधिक सोचने से, फीलिंग में आने से जो टाइम वेस्ट हुआ उसका दु:ख हुआ। बातें तो हमारे सामने भी आती होगी ना! पर मैं अपने को दु:खी नहीं करती हूँ। अगर मैंने दु:ख महसूस किया तो मैं भी वही दूँगी, मानो न मानो। जो मेरे अन्दर में होगा वह बाहर में जरुर एक्ट में आयेगा। चेहरे पर भी आयेगा, दु:ख लिया है या दु:खी हुए तो दूसरों को दु:ख ही देंगे। फिर दु:ख देने और लेने वालों को भूलना ही मुश्किल हो जाता है फिर कोई और दु:ख आता है तो इसमें फिर दोनों का टाइम वेस्ट होता है–इससे बचाओ अपने को। सेवाओं में भिन्न-भिन्न सीन सामने आयेंगी, फिर भी अगर कोई याद में रहने का पुरुषार्थ करते हैं तो बाबा सामने आता है और साथ देता है। बातों की सोंच में थोड़ा भी समय गया, तो यह जो पुरुषार्थ की लगन है, वो लगन की अग्नि न पैदा होती है, न काम करती है इसलिए साइलेंस चाहिए। साइलेंस में मज़ा तब आता है जब अन्तर्मुखी हैं।

जिस घड़ी जो बात सुना रहा है, उसी घड़ी उसे स्वरूप में लाने की लगन हो तो लिखने का टाइम ही नहीं होगा, मिस कुछ नहीं होगा। आप एक शब्द लिखेंगे, दूसरा मिस होगा, लिखने में बुद्धि चली गयी, यानि इतना बाबा के एक-एक महावाक्यों का कदर करो, ध्यान रखो तो बाबा ने जिस समय पुरुषार्थ को तीव्र करने की जो विधियाँ सिखाई हैं वो स्वरूप में आ जायेंगी। तो मुरली में जादू है हमारी जीवन यात्रा में कदम कदम पर वाह गुरू वाह! फिर बाप भी है, शिक्षक भी है। बाबा सुबह से लेके रात तक पुरुषार्थ की एक ही बात के गहराई में लेके जाता था इसलिए वो पक्का हो जाता था।

बेदागी हीरा बनना है तो दिल साफ रखो, तो हीरो एक्टर हीरे मिसल जीवन हो जायेगी। हर एक कहे, आपस में फीलिंग आये कि इसकी दिल साफ है, सच्ची है। सबको मेरे से यह फीलिंग है? दिल साफ और सच्ची है। सफेद कपड़ों में कही थोड़ा भी दाग लगे तो वो शोभता नहीं है क्योंकि वो दिखाई पड़ता है। दिल साफ नहीं है, तो मन शान्त नहीं रह सकता, कनेक्शन नहीं जुड़ता है तो फिर मन से मनमनाभव-मध्याजीभव नहीं हो सकते हैं। मन शान्त है तो बुद्धि राइट काम करती है। बुद्धि कभी कोई व्यर्थ में गई माना दिल में कोई बात लगी है, मन अशान्त हुआ है तो बुद्धि स्थिर नहीं हो सकती है, ना ही अन्तर्मुखी हो सकते हैं। पहले दिल मन ठीक है तो बुद्धि से योग लगे। याद दिल से करना है, योग बुद्धि से लगाना है। मेरी वृत्ति से ऐसी भासना आवे जो उसकी वृत्ति भी साफ हो जावे इसको कहा जाता है संग का रंग। कोई बात याद आती है तो मदद मिलती है और कोई बात याद आती है तो नुकसान करती है, तो यह भी अक्ल चाहिए ना।

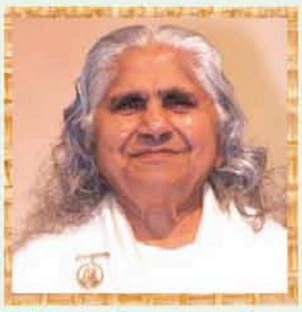

दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

सम्पन्न बनना है तो कैसा बनना है, जब तक वो लगन नहीं है तो लगेगा समथिंग मीसिंग है। कुछ मिस है मेरे से...ऐसी चितवना चाहिए, चिंता नहीं। घड़ी-घड़ी यह ख्याल आवे क्या मिस है मेरे से...वो अभी अगर मेरा खत्म होगा तो वाह बाबा वाह! शुक्रिया बाबा आपका। इसके लिए कोई भी बात है चलायमान, डोलायमान नहीं होंगे, भगवान की मेहरबानी है। अचल-अडोल रहेंगे व दूसरों को बनाएंगे।

विजय का तिलक सदा हमारे मस्तक पर लगा हुआ है

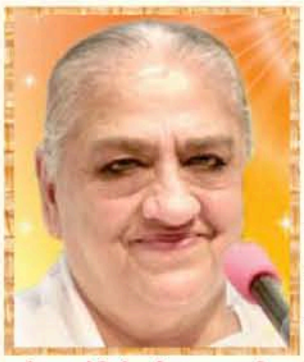

दादी हृदयमोहिनी,अति.मुख्य प्रशासिका

बाबा ने आप युगलों को कौन से तख्त पर बिठाया है? विश्व के ज़िम्मेवारी का तख्त दिया है। बोलो, आप सभी बड़े उमंग और उत्साह से आये हैं ना! और विश्व में आवाज़ फैलायेंगे कि हम ब्रह्माकुमार और कुमारियाँ विश्व परिवर्तन का कार्य कर रहे हैं। आपको कोई भी देखेगा तो कहेगा कि यह तो युगल रूप में रहते अपने नियम-संयम निभा रहे हैं। तो वो देखके सुनके ही परेशान होगा कि यह कैसे हो सकता है! लेकिन बाबा ने आपको कितना सहज युगल होते हुए भी अपने स्वधर्म में स्थित होने का मार्ग बताया है। बाबा ने आपको विश्व के आगे असम्भव को सम्भव कर दिखाने का गोल्डन चांस दिया है, उसको देख करके बाबा भी बहुत खुश हो रहा है। आप एक-एक को बाबा देख रहा है।

बाबा ने आपका मर्तबा कितना ऊँचा बनाया है। जो सन्यासी नहीं कर सके वो आप करके दिखा रहे हो। बोलो, बाबा की आज्ञा, श्रीमत, डायरेक्शन पर चलना सहज है या मुश्किल है? सहज है ना! बाबा की याद में जो परीक्षा देकर पास हुए हो, बाबा ने युगलों को देखकर कहा यह तो मेरा एक एक बच्चा विश्व के अन्दर नाम बाला करने वाला महान से महान है। बोलो, ऐसे महान हो ना!

आपको सहज लगता है ना! आपको देखकर बाबा भी कहता वाह मेरे बच्चे वाह! आप भी कह रहे हो वाह बाबा वाह! तो खुशी की बात है कि आज मधुबन में कितना अच्छा आप सब का संगठन हुआ है। बाबा ने आपको कितनी ताकत दी है। अरे, आत्मा रूप में स्थित हो जाओ तो मुश्किल नहीं लगता है। बाबा ने इतना महावीर बनाया है जो ऐसा पवित्र जीवन बिताना कोई बड़ी बात नहीं है। आप सबको बड़ी बात लगती है या कॉमन बात लगती है? कमलपुष्प समान न्यारे और प्यारे हो ना! मधुबन अपने घर में आकर आप सबको इतनी खुशी हो रही है ना! मधुबन में जो भी ग्रुप आता है वो भरपूर होके जाता है, आप भी भरपूर होके जायेंगे।

अभी बाबा के पास आकर विशेष क्या पुरुषार्थ किया? पुरुषार्थ यही विशेष करो कि हमको पास विद ऑनर होना है। पास होना तो कॉमन है। उसके लिए बस अपने को श्रेष्ठ आत्मा हूँ, बाबा का साथी हूँ, बाबा मेरे साथ है - इसको नहीं भूलो। बाबा को अपने दिल में बिठा दिया है ना। कभी निकल तो नहीं जाता है? माया ऐसी है जो बीच-बीच में डिस्टर्ब करती है। भले करने दो, वो अपना काम करती है, हम अपना काम करेंगे। हम बाबा के साथ हैं, साथ रहेंगे, सदा के लिए ब्रह्मा बाबा के साथ, मम्मा के साथ विभिन्न रूप में रहेंगे। कितना सुन्दर राज्य होगा अपना! रास खेलेंगे ना, यहाँ रास की?

जब दिल में बाबा बैठा है, तो दिल कितनी नजदीक है, नजदीक वाले को जल्दी बुला सकते हैं। बाबा का साथ है, मधुबन का स्थान है और विजय तो आपके तकदीर में है ही है। आप सबके मस्तक में विजय का तिलक लगा हुआ है। अभी बाबा कहते हैं कि हरेक को क्या याद रखना है? मुझे बाबा का साथी बन इस दुनिया को परिवर्तन कर अपना राज्य स्थापन करना है। अभी तो देखो क्या लगा पड़ा है? बाबा कुछ समय से कहते हैं कि अचानक, अचानक कुछ भी हो सकता है। तो अचानक क्या से क्या हो जाता है, वह समाचार तो आपने सुना ही। लेकिन हम बाबा के साथ बहुत सेफ़ हैं। मधुबन में आकर तो आप बहुत आराम करते होंगे, जो वहाँ (अपने लौकिक स्थान पर) नहीं कर सकते हैं। लेकिन बाबा की याद से वहां भी आराम में रहते, खुशी में रहते बाबा के साथ हो। सारे दिन में आप नोट करो कि कितना समय याद में रहे, तो यह याद का अभ्यास आगे चलकर बहुत काम आयेगा

यात्रा से परमात्मा तक...

''जब बाबा की गोद में गया तो मुझे अव्यक्त स्थिति की अनुभूति हुई। एकदम लाइट की अनुभूति। बाबा का शरीर रूई की तरह कोमल था। बैठते ही अशरीरी हो जाते थे, गहन सुख-शान्ति की अनुभूति होती थी।

इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी करके मैंने बाबा को कहा, बाबा, मैं ईश्वरीय सेवा में समर्पित होना चाहता हूँ, नौकरी नहीं करना चाहता। बाबा ने मुझे वरदान दिया, बच्चे, तुम मन-बुद्धि से समर्पित हो। शरीर से समर्पित होना आवश्यक नहीं । मेरी आज्ञा से तुम नौकरी करो '' - ऐसा निश्चयात्मक व परमात्म प्रेम से ओतप्रोत अनुभव व्यक्त कर रहे हैं शांतिवन स्थिति ट्रोमा सेंटर में सेवारत ब्र.कु.विनोद जैन -

मेरा जन्म उ.प्र. के मेरठ शहर में सन् 1943 में हुआ। माता-पिता धार्मिक विचारों वाले थे। पिताजी नियमों में इतने सख्त थे कि जब तक हम जैन मंदिर न जायें तब तक नाश्ता नहीं करने देते थे। सन् 1963 में धनबाद में इंजीनियरिंग में चयन के बाद मैं इंडियन स्कूल ऑफ माइन्स में इंजीनियरिंग करने लगा और वहीं हॉस्टल में रहने लगा। हॉस्टल के नज़दीक जैन मंदिर नहीं था इसलिए दर्शन किये बिना नाश्ता करने में बाधा आती थी। मेरा मन अशांत रहने लगा। एक जैन साधु से मिला तो उन्होंने कहा, पारसनाथ मंदिर (धनबाद से 50 कि.मी.दूर जिसे शिखर जी के नाम से जाना जाता है) की तीन बार यात्रा करेंगे तो आपको भगवान मिल जाएगा। उस यात्रा के नियम कड़े थे जैसे कि रात को 12 बजे यात्रा प्रारंभ करने के समय ठंडे पानी से स्नान करना, नंगे पॉव और निराहार रहकर ही जाना और आना, यात्रा के दौरान किसी भी व्यक्ति, वस्तु का सहारा नहीं लेना।

अनोखे राजयोग का परिचय

उस समय मैं युवक था। मैने चार दिन में चार यात्रायें लगातार कर ली। यात्रायें पूरी कर धनबाद लौटा। इंजीनियरिंग का पोस्ट ऑफिस अलग था। दोपहर लंच से पहले मैं पोस्ट ऑफिस गया। मैने एक संस्थान से योग की पुस्तक मँगवाई थी, मैं उसे देख रहा था । उन दिनों ब्र.कु.मोहन सिंघल भाई उसी कॉलेज में इंजीनियरिंग कर रहे थे। वे भी पोस्ट ऑफिस के सामने खड़े थे। उन्होंने मुझे योग की पुस्तक का अवलोकन करते देखा। उन्होंने कहा इस योग से आपको एक जन्म का स्वास्थ्य लाभ मिलेगा परंतु मैं ऐसा राजयोग जानता हूँ जिससे आपको 21 जन्म का लाभ मिलेगा। यह सुनते ही उसे और जानने की रूचि पैदा हो गई क्योंकि मुझे यह बात जैन धर्म के बिल्कुल अनुकूल लगी। जैन धर्म भी कहता है, आप इस जन्म में जो करेंगे, वो आपको आगे के जन्मों में मिलेगा।

अपने मस्तक में लाइट दिखाई दी

एक बार मोहन भाई सिन्द्री गये और वहाँ के सेवाकेन्द्र से एक पर्चा लेकर आये उसमें शिवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य था। मैने पर्चा पढ़ा, बहुत अच्छा लगा। आठ मार्च, सन् 1964 को धनबाद में सेन्टर खुल गया। वहाँ कानपुर वाले गुप्ता जी, ब्र.कु.सुरेन्द्र बहन, ब्र.कु.संतराम वकील, गंगे दादी जी सेवार्थ आये थे। मुझे अगले दिन (9 मार्च को) सेन्टर आने का निमंत्रण मिला। जैसे ही मैने दायाँ पैर सेवाकेन्द्र के अंदर रखा, मुझे मेरे मस्तक में लाइट दिखाई दी अर्थात् आत्म-अनुभूति हुई। उसी समय मुझे निश्चय हो गया कि भगवान यदि मिलेगा तो इसी सेवाकेन्द्र में मिलेगा।

मैं साइंस का विद्यार्थी था इसलिए मन में प्रश्न उठने स्वाभाविक थे पर मैने निश्चय किया कि मैं प्रश्न नहीं पूछूंगा, बहन जो कहेंगी, मानूंगा। बहन ने पूछा, भगवान कहाँ रहता है? मैने कहा, सब जगह। उन्होंने कहा, भगवान तो परमधाम में रहता है। मैने कहा, ठीक है, परमधाम में रहता है। आत्मानुभूति के कारण मन इतना आश्वस्त हो गया था कि कोई प्रश्न करने का सवाल ही नहीं रहा।

हॉस्टल में भी आश्रम से पालना

सन् 1964 में बाबा की मुरलियाँ चलती थीं, महापरिवर्तन होने वाला है। मैंने और मोहन सिंघल भाई ने निर्णय लिया कि हम बाबा की याद में हॉस्टल में खाना खुद ही बनायेंगे। हमने बनाना शुरू कर दिया। कुछ दिन तो ठीक चला परंतु कुछ शरारती छात्रों ने एक दिन हमारे भोजन-स्थान को अस्त-व्यस्त कर दिया। इससे हमारा अलग से खाना बनाने का उमंग फ़ीका पड़ गया। फिर हम दोनों ने बाबा को सारा समाचार लिखा। बाबा का डायरेक्शन आया कि आज से दोनों बच्चों का खाना धनबाद सेवाकेन्द्र पर ही बनेगा। निमित्त दादी देवी सब्ज ने तीन साल इसे प्यार से निभाया। आश्रम से टिफिन हॉस्टल में आ जाता था।

मन-बुद्धि से समर्पित का वरदान मिला

मुरलियों में सृष्टि परिवर्तन के महावाक्य सुनकर मैंने बाबा को पत्र लिखा, बाबा, मैं चार साल की इंजीनियरिंग नहीं करना चाहता। बाबा ने कहा, नहीं बच्चे, इसे पूरा करो, फिर बाबा राय करेंगे। इंजीनियरिंग पूरी करने पर मैंने बाबा को पुन: पत्र लिखा, बाबा पढ़ाई तो पूरी हो गई पर मैं अभी नौकरी नहीं करना चाहता। बाबा ने कहा, बच्चे, दो साल का स्नातकोत्तर करो। यह पढ़ाई भी पूरी करके मैंने पुनः बाबा को कहा, बाबा, मैं ईश्वरीय सेवा में समर्पित होना चाहता हूँ, नौकरी नहीं करना चाहता। बाबा ने मुझे वरदान दिया, बच्चे, तुम मन-बुद्धि से समर्पित हो। शरीर से समर्पित होना आवश्यक नहीं । मेरी आज्ञा से तुम नौकरी करो। फिर मैं माइन्स में सेफ्टी ऑफिसर (सुरक्षा अधिकारी) के रूप में नियुक्त हो गया।

कर्मों का लेखा सौंपा बाबा को

बाबा ने मुरलियों में कहा, इस जन्म में जो पाप आपसे हुए हैं (जाने या अनजाने में) वो मुझे लिखकर दो तो मैं आधा माफ कर दूँगा। मैंने 64 पन्नों की नोटबुक ली और बचपन से लेकर उस समय (22 साल की आयु) तक किये गये जिन-जिन कर्मों की स्मृति थी, सब लिख दिये। उस नोटबुक को लेकर पहली बार मधुबन आया। बाबा ने मुझे झोपड़ी में मिलने का समय दिया। मैं झोपड़ी के बाहर खड़ा था। बाबा ने मुझे अन्दर बुलाया। मैंने कहा, बाबा, मैं पाप लिखकर लाया हूँ, आधे माफ कर दो। बाबा ने कहा, बच्चे, बाबा यह लिखत नहीं पढ़ेगा, बाबा को अपने मुख से सुनाओ। मैंने रजिस्टर पढ़ना शुरू किया और देखा, बाबा का राइट हैण्ड हल्का-सा हिलता था मानो मेरे पापों से मुझे 50 प्रतिशत मुक्ति मिलती जा रही थी। बाबा के सामने मुझे लगा, मैं दर्पण के सामने बैठा हूँ, छिपा कैसे सकता हूँ। पढ़ते-पढ़ते मुझे कुछ और गलतियाँ याद आईं, मैंने वो भी सुना दीं यह सोचकर कि अभी तो सुनहरा अवसर है, नहीं तो ये सौ प्रतिशत रह जायेंगी। सुनाने के बाद मैं एकदम हल्का हो गया। वो बातें मुझे दुबारा याद नहीं आईं और बाबा का मुझ पर बहुत विश्वास बैठ गया।

बाबा की हर बात राज़ भरी

सन् 1968 में मधुबन में दो भाई जम्मू के और मैं, तीन की पार्टी थी। बाबा ने कहा, बच्चे, आज बाबा आपसे मिलेंगे। हम तीनों बाबा के कमरे के दरवाज़े के आगे खड़े थे। बाबा ने लच्छू दादी को कहा, बाबा से मिलने के लिए इन दो भाइयों को पहले बुलाओ और विनोद को कहो, इंतज़ार करे। यह देख बहुत संकल्प चले कि मैं इतना नज़दीक हूँ, मुझे पहले क्यों नहीं बुलाया? फिर वो दोनों बाहर आये और बाबा ने मुझे बुलाया। बाबा ने कहा, बच्चे, मैं जानता हूँ, आप क्या सोच रहे हो? तुम सोच रहे हो कि मुझे पहले क्यों नहीं बुलाया? इसका कारण है, मुझे आपको गोद देनी थी, उन दोनों को नहीं देनी थी। यदि आपको पहले बुलाता तो वे पर्दे में से आपको गोद देते हुए देखते और उनके संकल्प उठते इसलिए ऐसा किया। जब बाबा की गोद में गया तो मुझे अव्यक्त स्थिति की अनुभूति हुई। एकदम लाइट की अनुभूति। बाबा का शरीर रूई की तरह कोमल था। बैठते ही अशरीरी हो जाते थे, गहन सुख-शान्ति की अनुभूति होती थी। - शेष पेज 10 पर

सेनफ्रांसिस्को। प्रसिद्ध गायक यशुदास तथा प्रभा यशुदास को राखी बांधने के पश्चात ब्र.कु.एलिजाबेथ तथा ब्र.कु.वैशाली।

बैंगलूरू। खाद्य वितरण मंत्री दिनेश गुन्डुराव को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रामनाथ। साथ हैं ब्र.कु.सरला, ब्र.कु.सरोजा तथा ब्र.कु.सुरेन्द्रन।

भाल्की-कर्नाटक। प्राकृतिक आपदा प्रबंधन अभियान का दीप प्रज्जवलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.मोहन सिंघल, विधायक ईश्वर खाण्डरे, ब्र.कु.राधा व अन्य।

भैरहवा-नेपाल। कृषि विकास बैंक के कर्मचारी, व्यापारी, शिक्षक,आदि वर्ग के लिए आयोजित राजयोग शिविर के बाद ब्र.कु.शान्ति, ब्र.कु.भूपेन्द्र, ब्र.कु.ईन्द्रा तथा ब्र.कु.सत्या समूह चित्र में।

भोपाल-म.प्र.। एन.एफ.एल.कम्पनी में तनाव मुक्त कार्यक्रम के पश्चात् प्रबंधक दयाल जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रीना।

छोटा उदेपुर। नगर सेवा सदन के प्रमुख नरेन्द्र जायसवाल व उनकी धर्मपत्नी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.मोनिका तथा ब्र.कु.सुधा।

गोरखपुर-उ.प्र.। रेलवे ऑफिसर्स क्लब में कार्यक्रम के पश्चात् जनरल मैनेजर के.के अटल, सी.एम.ई.अनिल शर्मा, सी.सी.एम. अरविन्द जी, सीसीई आर.पी.निबर्या, ब्र.कु.पारूल तथा ब्र.कु.सावित्री।

कोटा। वीएमओयू यूनिवर्सिटी के साथ ब्रह्माकुमारीज मूल्य एवं आध्यात्मिक पाठ्यक्रम की शुरूआत करते हुए वाइस चांसलर डॉ.विनय कुमार पाठक, ब्र.कु.मृत्युंजय, ब्र.कु.ओमप्रकाश तथा अन्य।

काठमाण्डु। जिला न्यायधीशों के लिए आयोजित कार्यक्रम के पश्चात ब्र.कु.राज दीदी तथा ब्र.कु.कुसुम समूह चित्र में।

फतेहपुर-यू.पी.। मातेश्वरी जगदम्बा के स्मृति दिवस पर माल्यार्पण करते हुए करन सिंह पटेल, पूर्व अध्यक्ष भाजपा साथ में उनकी धर्मपत्नी शान्ति देवी, ब्र.कु.नीरू तथा अन्य।

गोण्डा (उ.प्र.)। सुप्रसिद्ध समाजसेवी अन्ना हजारे को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.दिव्या।

हरदोई-यू.पी.। नये उप सेवाकेन्द्र के उद्घाटन पर अध्यक्ष मुकेश अग्रवाल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रोशनी।

सिविल लाइन-कटनी। 'स्वस्थ्य भारत' कार्यक्रम में उपस्थित इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ.सुब्बाराव, डॉ.ज्योत्सना निगम, डॉ.बी.आर.पंजवानी, डॉ.के.पी.श्रीवास्तव, सिविल सर्जन डॉ.दिनेश बरौड़ा,डॉ.एस.पी.सोनी, संजय तिवारी व ब्र.कु.लक्ष्मी।

दुनिया को बनाना ...

-पेज 1 का शेष

प्रिय आत्माएं प्रिय संतान हैं। हम सभी साधना इसलिए करते हैं कि हमारा आंतरिक संबंध परमपिता परमात्मा से सदैव बना रहे। बच्चे तो पिता को याद करते ही रहते हैं मगर इसके लिए कोई साधना करने की जरूरत नहीं होती। साधना करने की जरूरत तब होती है जब पिता का परिचय स्पष्ट रीति से मालूम नहीं होता है। उनकी स्पष्ट पहचान यह है कि वह निराकार है, प्रकाश रूप है और अशरीरी है। हम आत्माएं इस सृष्टि रंग मंच पर अनेक शरीरों के माध्यम से विभिन्न भूमिकाओं का निर्वहन करते हैं। अपने वायदे अनुसार परमात्मा फिर से भारत भूमि पर आये हैं और हमें हमारा सत्य आत्मिक परिचय देकर हमारे अंदर फिर से देवत्व प्रतिष्ठापित कर रहे हैं। अब इस बात को समझ कर हमें अपने जीवन का कल्याण करना है। अपने घर को ही आश्रम बनाना है। जीवन को विकार मुक्त बनाना है। परमात्मा इस कार्य में हमारी मदद कर रहे हैं।

धार्मिक सेवा प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु.मनोरमा ने कहा कि मानव जीवन की समाप्त प्राय मुस्कान को फिर से उनके चेहरों पर लाने के प्रयास रुप इस सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। संगठित होकर हम संसार को स्वर्ग बना सकते हैं, विभाजन के नाम पर संसार नर्क बना है। दिल के दरवाजों को खोलिये और जगत नियंता के इशारों को उसमे प्रविष्ट होने दीजिए।

कर्नाटक से पधारे भाई वसवमूर्ति स्वामी जी ने कहा कि ईश्वरीय विश्वविद्यालय अति उत्तम सेवा कर रहा है। हम इनके साथ हैं। इसका लाभ भारत के हर एक कोने में फैलना चाहिए।

नागपुर से पधारे फादर फालसेन ने कहा कि इस विश्वविद्यालय की ओर से इस आध्यात्मिक सम्मेलन में भाग लेकर मैं काफी प्रसन्न हूँ। हमे इसका लाभ अवश्य मिलेगा। यह विषय सामयिक है। हम सब यहाँ एक आध्यात्मिक उल्लास एवं चेतना से सराबोर होंगे ऐसा विश्वास है।

बीदर से पधारे ज्ञानी दरबार सिंह जी ने कहा कि यहाँ की व्यवस्था बहुत सुंदर है। हमें परमात्मा की गोद तभी प्राप्त होगी जब हम माँ समान इन ब्रह्माकुमारी बहनों की बात पर विश्वास करके बुराईयों को छोड़ेंगे। इनकी बातों को समझकर जीवन को श्रेष्ठ बनाओ।

धार्मिक सेवा प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु.रामनाथ ने कहा कि सारा विश्व इन्हीं त्यागी, तपस्वी, संतों, महंतों, साध्वियों एवं माताओं की आध्यात्मिक शक्ति की वजह से भारत को विश्व का गुरु मानता है। एक वक्त था जब भारत स्वर्ग भूमि थी मगर आज नर्क बन गया है। यह आध्यात्मिक ज्ञान की कमी की वजह से हुआ है। ब्र.कु.कुंती ने कुशल मंच संचालन किया। कुमारी अनन्या ने स्वागतार्थ तांडव नृत्य किया।

मतमतांतर भुलाकर ..

-पेज 12 का शेष

इतनी बड़ी लहरें हैं कि हम इस परमात्म-शक्ति से सम्पन्न स्थान के साथ जुड़कर भवसागर पार हो सकते हैं। ज्ञान रूपी झाडू लेकर अपने हृदय रुपी घर से विकारों रूपी कूड़े को बाहर फेंक दो और यही इस स्थान का मिशन है। जैसे ब्रह्माकुमार भाई-बहनों का पवित्र सफेद चोला है ऐसे हम भी बेदाग हो जाएं ताकि हमारा जीवन सफल हो जाए। मैं यहां से एक खुशी की लहर लेकर जा रहा हूँ और जाकर बताऊंगा कि आपको श्रेष्ठ जीवन बिताना है तो ब्रह्माकुमारी संस्था के ऊसूलों को अपना लो।

स्वामी शास्वतानंद जी महाराज, अखण्ड परमधाम आश्रम अमरावती ने कहा कि भारत कब इंडिया बन गया वो पता ही नहीं चला। प्राचीन भारत की संस्कृति, शिष्टाचार और संस्कार की झलक मुझे ब्रह्माकुमारी बहनों में दिखाई दे रहे हैं। यहाँ आकर मुझे परमशांति की अनुभूति हुई है जिसे लेकर मैं यहां से जाऊंगा।

माताजी नंदाताई, ककैया मठ, जमखण्डी ने कहा कि यहां चल रहे सभी विचार देव लोक के विचारों के जैसे थे इसलिए मुझे देवलोक यहीं पर दिखाई दे रहा है। जहां अपनापन है, करूणा है, प्रेम है, दया है, वह सचमुच स्वर्ग है। इस परिसर की सुबह मन को बहलाने वाली थी और इस परिसर में बहुत अच्छा वातावरण मिला है। यह विश्व विद्यालय एक घर है जहां दिव्य शक्तियों का निर्माण हो रहा हैं और आगे भी होता रहेगा। जब मैं यहाँ आई थी तो संस्था के प्रति नकारात्मक विचारों के साथ आई थी परंतु मैने वो नकारात्मक विचार डिलीट कर दिया और अब मै यहाँ से समारात्मक विचारों को लेकर जा रही हूँ।

दु:ख नहीं, सुख का निर्माण करें

प्रश्न:- मुझे पता था ये करने से मेरे माता-पिता को खुशी मिलेगी। ये विचार तो मेरे साथ ही रहा कि और इसलिए मैंने इसे किया। तो इसमें फिर बुरा क्या है?

उत्तर:-आपने किसी कार्य को या किसी चीज को एक बार अपना बना लिया तो फिर आपके माता-पिता उस समीकरण से बाहर हो जाते हैं। आपने जो निर्णय लिया अपनी लाइफ में चाहे वो कैरियर का है, चाहे वो आपके संबंधों का है फिर उसकी जिम्मेवारी आपकी हो जाती है, चाहे आप उसमें सफल हों या नहीं।

मैं एक ऐसे भाई को जानती हूँ जिनका एक लड़की के साथ अच्छा संबंध था। लेकिन उसकी माँ उसे पसंद नहीं करती थी। भले उनके बीच का संबंध प्रगाढ़ था लेकिन अपने माता-पिता की खुशी के लिए उसने उसे छोड़ दिया। ऐसा आजकल बहुत सारे बच्चों के साथ होता है। अब भले वो दूसरी तरफ सेट भी हो जाते हैं उसकी कहीं और शादी भी हो जाती है। लेकिन वो खुश नहीं होता है क्योंकि उसके मन के अंदर यही सोच होती है कि ये सब मैंने अपनी माँ की खुशी के लिए किया। फिर वो लड़का सोचता है कि मैंने ये सही किया या नहीं किया, लेकिन मेरी खुशी तो वहां थी। और यही विचार उसके मन में बार-बार आती रहती है कि ये मैंने अपने माता-पिता की खुशी के लिए.... । इससे क्या होता है कि जितना समय वो विचार आपके मन में रहेगा आप दु:ख में रहेंगे। और फिर वो आपके संबंधों में, आपके माता-पिता के साथ, कभी न कभी तो वो सारा बाहर निकल ही आयेगा कि ये मैंने अपनी खुशी के लिए नहीं बल्कि आपकी खुशी के लिए किया। तो इससे हमारे संबंधों पर कितना गहरा असर पड़ता है।

-ब्र.कु.शिवानी

प्रश्न:- मेरी अपेक्षायें उनसे इतनी ज्यादा हो जाती है कि मैं उनकी खुशी की परवाह भी नहीं कर पाती हूँ?

उत्तर:- विशेषकर अगर मैंने आपके लिए कुछ किया ये सोचकर किया कि कभी आप भी मेरे लिए करेंगे। अगर आपने नहीं किया तो मैं कहूंगा ना कि मैंने आपके लिए क्या-क्या किया और मेरी लिस्ट तो मानस पटल पर हमेशा तैयार होती ही है कि मैंने आपके लिए क्या-क्या किया और आपने क्या किया। ऐसा यह बहुत करके व्यवसायिक संबंधों में होता है। फिर तो वो खुद भी दर्द में रहेंगे, माता-पिता के साथ जो उर्जा विनिमय(आदान-प्रदान) होगी वो भी दर्द वाला, फिर आप जिस भी नौकरी में या जहां भी आपके रिश्ते जुड़े होंगे, वहां भी लोग दु:ख में रहेंगे। और ये सब इसलिए हो रहा था कि मुझे माता-पिता को खुशी देनी है। इतना सारा दु:ख-दर्द क्रियेट करके क्या आप माता-पिता को खुशी दे पायेंगे? नहीं। थोड़ा समय लो अपने आपको समझाओ कि उन्हें खुशी देना यह हमारा निर्णय है।

ये जो अपेक्षायें हम रखते हैं और उसे पूरा करने के प्रयास में जो सारा दिन लगे हुए हैं। ये भी हमारी स्थिति को ऊपर-नीचे करता है। एक है आप अपेक्षा भले रखो, क्या आप ऐसा करेंगे या नहीं करेंगे, लेकिन मेरी खुशी उस पर निर्भर नहीं है। उससे क्या होगा आप अपेक्षा रखेंगे लेकिन अगर वो पूरी नहीं हो पायी तो आप दु:खी नहीं होंगे।

सारी प्रतिक्रिया तब आती है जब हम दु:खी हो जाते हैं। उस समय तो अपेक्षा अलग हो जाती है। लेकिन मैं दु:खी हो गयी तब मैं प्रतिक्रिया करती हूँ। अगर मैं दु:खी नहीं हुई तो प्रतिक्रिया नहीं करूंगी, यदि प्रतिक्रिया नहीं करूंगी तो आपको सशक्त करूंगी। बच्चे को अगर परीक्षा में 90 प्रतिशत नंबर नहीं मिला, लेकिन अगर मैं दु:खी नहीं हुई, गुस्सा नहीं किया तो मैं उसे स्वीकार करूंगी, उससे प्यार से बातें करूंगी ताकि वो अगली बार इससे अच्छा प्रदर्शन कर सके। यदि मैं गुस्सा होकर बोलूं कि हम तुम्हारे ऊपर इतनी मेहनत इसलिए करते हैं कि तुम हमारी अपेक्षाओं को पूरा नहीं करो। हमारी यह भाषा उसे उत्साहित नहीं करती है बल्कि उसे और ही हीन भावना से ग्रसित कर देती है। हम बहुत बार कहते तो थे लेकिन समझ नहीं पाते थे कि हमारी अपेक्षा कितनी बढ़ गयी है और मुझसे जो अपेक्षा हैं उसे पूरा करने के लिए हम कितने तत्पर रहते हैं।

गणपति बप्पा मोरया...के स्वर सुनाई पड़ते हैं तो मानो वही चहल-पहल, वही आस्था सबके मन-मस्तिष्क में उभर आया करती हैं। व्यापारी लोग बड़े-बड़े पंडाल बनाकर गणेश जी की मूर्ति की स्थापना, पूजा-अर्चना करते हैं। ये सब क्यों होता है? उसके पीछे आध्यात्मिक रहस्य क्या है? ज़रा उन बिन्दुओं के रहस्य जानें।

गणेश जी के दोनों ओर बुद्धि और सिद्धि नामक उनकी दो पत्नियाँ दिखाई जाती हैं। ये क्रमश: ज्ञान और उस द्वारा होने वाली सफलता का प्रतीक है। जो बुद्धिवान होगा अर्थात् सोच-समझ कर कार्य करेगा, दूरदर्शिता का प्रयोग करेगा, उसको सिद्धि अथवा सफलता तो होगी ही। सफलता तो ज्ञानवान व्यक्ति का जन्म सिद्ध अधिकार है।

कई बार गणेश जी के चित्रों में उनके साथ केला फल भी चित्रित किया जाता है, साथ ही लक्ष्मी को भी। केले के पौधे की यह विशेषता है कि उसके ऊपर के पत्ते को हटाएं तो उसके नीचे और पत्ता निकल आता है। यदि उसको हटाएं तो उसके नीचे एक और पत्ता सामने आ जाता है। अपनी इस विशेषता के कारण केला इस बात का सूचक है कि ज्ञानवान व्यक्ति की बातों में गहराई होती है। उसकी गहराई में जायें तो इसमें एक और बात छिपी होती है। इस बात को देखकर किसी कवि ने कहा है –जैसे केले के पात-पात में पात। तैसे ज्ञानी की बात-बात में बात।

अत: गणपति के साथ केले को चित्रित करने के पीछे ये भाव होता है कि ज्ञानवान व्यक्ति की बातों में बहुत गहराई होती है।

'लक्ष्मी' शब्द 'लक्ष्य' शब्द से बना है। लक्ष्मी को सदा कमल पर बैठे या खड़े दिखाया जाता है। यहाँ तक कि उनके नामों में से एक नाम कमला भी है। लक्ष्मी वैकुण्ठ के राज्य-भाग्य की परिचायिका है। वो पवित्रता, सुख और शान्ति का मूर्त रूप है क्योंकि ज्ञानवान व्यक्ति के जीवन का लक्ष्य भी सम्पूर्ण पवित्रता व शान्ति के जीवन की प्राप्ति करना अथवा कमल पुष्प समान बनना अर्थात् स्वर्ग का सुखकारी स्वराज्य प्राप्त करना होता है। इसलिए गणपति के साथ लक्ष्मी को दिखाना स्वाभाविक है।

ये सभी लक्षण किस पर चरितार्थ होते हैं?- हमने गणपति जी के जिन अलंकारों व प्रतीकों आदि का उल्लेख किया है, उन सबसे यही निष्कर्ष निकलता है कि गणपति जी, परमपिता परमात्मा द्वारा प्राप्त ज्ञान को गहराई से समझने वाले, उसे जीवन में पूर्णत: व्यवहार में लाने वाले, स्वयं लक्ष्य स्वरूप और ज्ञान की सिद्धियों को प्राप्त करने वाले ही का प्रतीक है।

परन्तु जब हम यह सुनते और मानते हैं कि गणपति शिव सुत, शिव के बालक अथवा पुत्र ही का गुणवाचक या कर्तव्य-वाचक नाम है तो हमें उनके परिचय का और अधिक स्पष्टीकरण मिलता है। गणपति अथवा गणनायक एक प्रकार से प्रजापति अथवा प्रजापिता शब्द का पर्यायवाची है क्योंकि गण और प्रजा लगभग समानार्थक है। इस बात को ध्यान में रखते हुए कहा जा सकता है कि गणपति प्रजापिता ब्रह्मा ही थे। यह उनका कर्तव्य-वाचक नाम है क्योंकि प्रजापिता ब्रह्मा ने ही परमपिता परमात्मा शिव से ज्ञान को प्राप्त कर ज्ञानियों में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया। ब्रह्माजी की जीवन कहानी को सुनने के बाद इस कथा का रहस्य भी समझ में आता है कि कैसे परमपिता परमात्मा शिव ने उनके पुराने मानवीय संस्कारों के स्थान पर अब उन्हें नये संस्कार और विशाल बुद्धि प्रदान की। उन्होंने इस ईश्वरीय बुद्धि के आधार पर नई सृष्टि की स्थापना के कार्य में आये विघ्नों को पार किया। इसलिए वे विघ्न विनाशक भी हैं।

प्रजापिता ब्रह्मा के अतिरिक्त अन्य भी जो ईश्वरीय ज्ञान को प्राप्त करते हैं और ज्ञानवान के लक्षणों को धारण करते हैं उस पर भी ये लक्षण चरितार्थ होते हैं, गोया वे भी विघ्न-विनाशक ही बन जाते हैं।

स्वास्तिक गणपति का समानार्थक कैसे है?- ''स्वास्तिक'' शब्द का अर्थ है – 'शुभ', 'मंगलकारी'। इसलिए यह विघ्न-विनाशक गणपति का समानार्थक है।

स्वास्तिक वास्तव में सारे ज्ञान का सार

बुद्धि - सिद्धि नायक गणेश

परमपिता परमात्मा द्वारा प्राप्त ज्ञान को गहराई से समझने वाले, उसे जीवन में पूर्णत: व्यवहार में लाने वाले, स्वयं लक्ष्य स्वरूप और ज्ञान की सिद्धियों को प्राप्त करने वाले ही का प्रतीक है - गणेश।

चित्रित करता है। इसके बीच की दो रेखायें जो परस्पर एक-दूसरे को समकोण पर विच्छेद करती हैं, वे किसी एक वृत्त के दो व्यासों के समान हैं जो कि उस वृत्त को चार ऐसे बराबर भागों में बांटते हैं जो परस्पर विपरीत दिशा में हैं और इसलिए दार्शनिक दृष्टिकोण से विपरीत सामाजिक -राजनीतिक-धार्मिक स्थिति के संकेतक हैं। स्वास्तिक की चार भुजाएं इन्हीं चार विपरीत दिशाओं और दशाओं को इंगित करती है। सबसे ऊपर की दायीं ओर की भुजा सतोप्रधानता, पवित्रता, सुख और शान्ति की स्थिति की द्योतक है और इसलिए यह सृष्टि-चक्र के सर्वप्रथम युग–सतयुग को चित्रित करती है। इसके बाद दायीं ओर नीचे की दिशा चित्रित करने वाली भुजा धीरे-धीरे पवित्रता, सुख, शान्ति की कलाओं के ह्रास को जताती हुई त्रेतायुग की द्योतक है जिसमें भी सात्विकता, पवित्रता, सुख और शान्ति विद्यमान होते हैं यद्यपि कम मात्रा में। तत्पश्चात् बायीं दिशा में संकेत करती हुई भुजा इस बात को चित्रित करती है कि त्रेता के अन्त में देवता वाम मार्ग में चले गए। धर्म की ग्लानि आरम्भ हो गई। जीवन वाम पक्ष की ओर मुड़ गया अर्थात् उसमें अपवित्रता, दु:ख और अशान्ति ने प्रवेश किया और समाज को विभाजित करने वाले कारण जैसे कि अनेक धर्म, अनेक भाषाएं, अनेक वाद शुरू हो गये और इनके परिणामस्वरूप लड़ाई-झगड़े, घृणा, द्वेष – ये भी दिनों-दिन बढ़ते चले गए।

इसके बाद स्वास्तिक की चौथी भुजा, जो बायीं ओर ऊपर की दिशा में उठी है, वो बुराई, लड़ाई, पापाचार, अत्याचार, विकार के बढ़ते जाने की द्योतक है। यहाँ तक कि धर्म की अति ग्लानि हो जाती है और कलियुग के अन्त में घोर अज्ञानता, पापाचार और नरसंहार होता है।

धर्म की अति ग्लानि की इस बेला में ही परमात्मा अवतरित होकर ज्ञान और योग की शिक्षा देते हैं। पुन: सतयुग की स्थापना करते हैं, मनुष्य को देवता बनाते हैं और नर को श्रीनारायण पद के अधिकारी बनाते हैं।

इस प्रकार स्वास्तिक विश्व के तीनों कालों के इतिहास का तथा आत्माओं के आवागमण के चक्र का रहस्य खोल कर हमारे सामने रख देता है। इस रहस्य को जान लेने से मनुष्य का कल्याण हो जाता है। अमंगल-मंगल में, अशुभ-शुभ में और अनिष्ट, निर्विघ्नता में परिवर्तित हो जाता है। इसलिए जैसे गणपति ज्ञान-निष्ठ अवस्था के प्रतीक हैं, वैसे ही यह स्वास्तिक भी ज्ञान को एक रेखाचित्र द्वारा एक दृष्टि में ही समझा देता है और इसलिए इसे भी लोग गणेश ही कहने लगे हैं। जैसे वह हर शुभ कार्य अथवा धार्मिक आयोजन के प्रारम्भ में गणपति का पूजन करने लगे, वैसे ही वे ये रेखाकार चित्र अपने बही के शुरू में, भूमि पूजन के समय, गृह प्रवेश के समय तथा हर मंगलकारी पर्व के समय करने लगे, इसके साथ-साथ वह कलश और नारियल का भी प्रयोग करने लगे क्योंकि परमपिता ज्योतिस्वरूप परमात्मा की आकृति भी नारियल जैसी है और उस ज्ञान सागर पिता ने सागर को गागर में बन्द करने की उक्ति के अनुसार नर-नारियों को ज्ञान कलश दिया और स्वास्तिक रूपी चक्र की तरह सृष्टि चक्र का ज्ञान दिया।

इन सब रहस्यों को समझते हुए अब हमें यह चाहिए कि स्वास्तिक द्वारा सृष्टि चक्र का जो ज्ञान स्पष्ट होता है और गणपति अथवा प्रजापिता ब्रह्मा जिस कारण से ज्ञानियों में सर्वश्रेष्ठ हुए, उस ज्ञान को हम अब सुनें और धारण करें।

हमारे लिए यह सौभाग्य की बात है कि अब परमपिता परमात्मा शिव ने फिर से वह ज्ञान-कलश प्रदान किया है और फिर से उस लुप्त-प्राय: ज्ञान का रहस्य सुनाया है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, हरेक इच्छुक नर-नारी को अपनी यह नि:शुल्क सेवा प्रदान करता है कि वह इसके किसी भी सेवाकेन्द्र पर प्रात: या सायं पधार कर ज्ञान रूपी अमृत का पान करें तथा जीवन में आनन्द रूपी मार्ग का बोध करें।

सम्बलपुर। सम्बलपुर के डी.आर.एम. तथा उनकी धर्मपत्नी के साथ ज्ञान चर्चा करते हुए ब्र.कु.पार्वती।

कुरावली-यू.पी.। चेयरमैन अभिलाष सिंह राठौर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.संगीता तथा ब्र.कु.विकास रंजन।

मैनपुरी-यू.पी.। उत्तर प्रदेश के पूर्व राज्यमंत्री ठा.जयवीर सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.अवन्ति। साथ हैं ब्र.कु.नरेन्द्र।

हुमनाबाद-कर्नाटक। गीता पाठशाला के उद्घाटन समारोह में विधायक राजशेखर पाटिल, एम.आर.गादा, ब्र.कु.प्रतिमा, ब्र.कु.राधा तथा ब्र.कु.प्रभाकर।

मण्डी-गोविन्द गढ़। 'अलविदा डायबिटिज़ शिविर' का उद्घाटन करते हुए डॉ.श्रीमन्त साहू, नगर काउंसिल सरदार हरपाल सिंह, सैक्शनल आफिसर दीपक सप्परा, उद्योगपति राजकुमार जी, दिनेश कुमार तथा ब्र.कु.शशि।

मनोहरथाना। मातेश्वरी जी की 48वीं पुण्य तिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए तहसीलदार शिवदयाल वर्मा, प्रिंसीपल रामजीलाल कोली, ब्र.कु.मीना तथा अन्य।

शान्तिकुण्ड-ब्रह्मपुर। 'मानसिक परिवर्तन में आध्यात्मिक चिन्तन की भूमिका' कार्यक्रम में अपने विचार रखते हुए राधाकान्त मठ के महन्त कृष्ण गोपाल महाराज। मंचासीन हैं विधायक डॉ.रमेश चन्द्र पटनायक, डॉ.शरत चन्द्र नायक, बिशप साउथ ओडिशा, महान संघ के अध्यक्ष सुशांत साबत, ब्र.कु.मंजु तथा ब्र.कु.माला।

डाकपत्थर। पुलिस अधीक्षक रामनरेश शर्मा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सविता।

दिल्ली-लॉरेन्स रोड। टेलि कम्यूनिकेशन कन्सल्टेन्ट इंडिया लिमिटेड कम्पनी में 'तनाव मुक्त प्रबंधन' कार्यक्रम के पश्चात ब्र.कु.लक्ष्मी तथा अधिकारी व स्टॉफ समूह चित्र में।

दिल्ली -डिफेंस कॉलोनी। प्राथमिक विद्यालय के ट्रेनी शिक्षकों के साथ नैतिक तथा आध्यात्मिक चर्चा करते हुए ब्र.कु.अनुज।

लोधी रोड-दिल्ली। एन.टी.पी.सी. लिम. एवं महारत्न कम्पनी के अधिकारी व परिजनों हेतु आयोजित कार्यक्रम में प्रकृति के साथ सामंजस्य विषय पर प्रवचन करते हुए ब्र.कु.पीयूष।

राजीव नगर-दिल्ली। 'चिल्ड्रेन पर्सनालिटी डेवेलपमेन्ट समर कैम्प' में ब्र.कु.पूर्णिमा बच्चों को सम्बोधित करते हुए।

कथा सरिता

चार रत्न

यूनान के महात्मा अफलातून ने मरते समय अपने बच्चों को बुलाया और कहा -''मैं तुम्हें चार-चार रत्न देकर मरना चाहता हूँ। आशा है तुम इन्हें सँभालकर रखोगे। इन रत्नों से अपना जीवन सुखी बनाए रहोगे।'' बच्चों ने रत्न प्राप्ति के लिए हाथ फैलाए तो अफलातून ने इस प्रकार उन्हें रत्न दिए - '' पहला रत्न 'क्षमा' का देता हूँ -तुम्हारे प्रति कोई कुछ भी कहे, तुम उसे विस्मृत करते रहो व कभी उसके प्रतिकार का विचार अपने मन में न लाओ।'' निरहंकार का दूसरा रत्न देते हुए समझाया कि अपने द्वारा किए गए उपकार को भूल जाना चाहिए।

''तीसरा रत्न है - 'विश्वास' -यह बात अपने हृदयपटल पर अंकित किए रखना कि मनुष्य के बूते कभी कुछ भला-बुरा नहीं होता, जो कुछ होता है वह सृष्टि के नियंता के विधान से होता है। चौथा रत्न है 'वैराग्य' -यह सदैव ध्यान में रखना कि एक दिन सबको मरना है।''

सांसारिक सम्पत्ति पाकर तो पता नहीं उनका क्या बनता, पर इन दिव्य गुण रूपी रत्नों का अनुसरण कर निहाल हो गए।

बांटो तो..दुःख घटे, सुख बढ़े

एक अस्पताल में दो रोगियों की दोस्ती हो गई। दोनों गंभीर रूप से बीमार थे। यूं तो दोनों को ही उठने की इजाजत नहीं थी, पर दोपहर के खाने के बाद, एक रोगी को उसका भोजन पचाने के लिए बैठाया जाता था। दूसरा रोगी कमरे में पड़े-पड़े नीरस जिन्दगी गुजारने के दुखड़े उससे बांटा करता था। चूंकि पहले रोगी का पलंग कमरे की एकमात्र खिड़की के पास था, लिहाजा, उसने बैठे-बैठे अपने मित्र (दूसरे रोगी) को खिड़की से बाहर के नजारों के बारे में बताने का नियम बना लिया। बाग-बगीचे, झील और उसमें तैरती बत्तखों, पेड़ों पर बसारे बनाती चिड़ियों और बाहर घूमते लोगों के बारे में वो रोज एक घंटे तक विस्तृत वर्णन देता था। दूसरा उठकर देख नहीं पाता था, पर आंखें बंद करके, बाहर की दुनिया के चित्रों को आंखों में संजोता रहता था।

एक दिन खिड़की के पास वाले रोगी की मृत्यु हो गई। दूसरे रोगी ने डॉक्टर से निवेदन किया कि अब उसका पलंग खिड़की के पास लगा दिया जाए, ताकि वो अपने दोस्त के बताए दृश्यों का खुद आनंद ले सके। उसकी बात सुनकर डॉक्टर व नर्स सभी हैरान रह गये। उन्होंने दूसरे रोगी को बताया कि पहला रोगी एक असाध्य बीमारी से त्रस्त था और अपनी नेत्र ज्योति खो चुका था। वो दीवार तक भी देख नहीं सकता था, खिड़की से बाहर देखना तो दूर की बात है। तब दूसरे ने जाना कि खिड़की से दूर होने के उसके दुख को कम करने के लिए ही उसका दृष्टिहीन दोस्त दृश्यचित्र खींचता रहता था।

सच ही है, दुख बांटने से आधा हो जाता है, पर खुशी दोगुनी। अगर आपको धन की कमी का दुख है, तो अपनी ऐसी खूबियों को गिनकर देखिए, जिन्हें पैसों से नहीं खरीदा जा सकता। बताइए, क्या तब भी आप खुद को निर्धन कहेंगे? रहे।' यह सुनकर सारी सभा में मौन छा गया।

लगाव

एक व्यक्ति महात्मा बुद्ध के पास आया और बताया कि उसका एकमात्र पुत्र आकस्मिक मृत्यु को प्राप्त हुआ। तभी से उसके शोक में न वह ठीक से सो पाता है और न खाता-पीता है। बस, एक ही आशा में उसका जीवन बचा हुआ है कि कहीं से उसका पुत्र फिर से आ जाएगा। उसकी व्यथा सुनकर बुद्ध बोले, 'लगाव से दुख ही होता है।' उस व्यक्ति ने असहमति जताते हुए कहा, 'आप गलत कह रहे हैं। लगाव से कष्ट नहीं होता। वह तो प्रसन्नता और आनंद देता है।' बुद्ध कुछ और कहते, इसके पहले वह वहां से चला गया।

यह बात सार्वजनिक बहस बनकर राजा प्रसेनजित तक पहुंची। उन्होंने रानी के समक्ष हुई बातचीत में बुद्ध को गलत ठहराया। रानी बुद्ध की बात का मर्म जानती थीं, इसलिए उन्होंने बुद्ध के द्वारा उस बात के समर्थन में सुनाई गई दो घटनाएं राजा को बताते हुए कहा, 'महाराज! श्रावस्ती में हाल ही एक महिला अपनी मां की मृत्यु होने से दुख में पागल हो गई। लड़की का विवाह किसी और से हो जाने पर उसके प्रेमी ने आत्महत्या कर ली। इससे यही प्रकट होता है कि लगाव से दुख होता है। क्या आप राजकुमारी से प्रेम करते हैं?' राजा चकित होकर बोले, 'अवश्य ही करता हूँ।' रानी ने फिर प्रश्न किया, 'यदि वह किसी दुर्घटना की शिकार हो जाए तो क्या आपको दुख न होगा?' राजा ने स्वीकार किया कि उन्हें दुख होगा। अब वे बुद्ध की बात से पूर्णतः सहमत हुए। वस्तुतः लगाव या प्रेम अल्पकालीन आनंद देता है। प्रिय पात्र के अभाव या उसे कष्ट में देख यह प्रेम दुख में परिणत होकर तकलीफ देता है, इसलिए अपने प्रेम को संयम की लगाम से कस कर रखें।

सुखी कौन ?

एक व्यक्ति महात्मा बुद्ध के पास आया और बताया कि उसका एकमात्र पुत्र आकस्मिक मृत्यु को प्राप्त हुआ। तभी से उसके शोक में न वह ठीक से सो पाता है और न खाता-पीता है। बस, एक ही आशा में उसका जीवन बचा हुआ है कि कहीं से उसका पुत्र फिर से आ जाएगा। उसकी व्यथा सुनकर बुद्ध बोले, 'लगाव से दुख ही होता है।' उस व्यक्ति ने असहमति जताते हुए कहा, 'आप गलत कह रहे हैं। लगाव से कष्ट नहीं होता। वह तो प्रसन्नता और आनंद देता है।' बुद्ध कुछ और कहते, इसके पहले वह वहां से चला गया।

यह बात सार्वजनिक बहस बनकर राजा प्रसेनजित तक पहुंची। उन्होंने रानी के समक्ष हुई बातचीत में बुद्ध को गलत ठहराया। रानी बुद्ध की बात का मर्म जानती थीं, इसलिए उन्होंने बुद्ध के द्वारा उस बात के समर्थन में सुनाई गई दो घटनाएं राजा को बताते हुए कहा, 'महाराज! श्रावस्ती में हाल ही एक महिला अपनी मां की मृत्यु होने से दुख में पागल हो गई। लड़की का विवाह किसी और से हो जाने पर उसके प्रेमी ने आत्महत्या कर ली। इससे यही प्रकट होता है कि लगाव से दुख होता है। क्या आप राजकुमारी से प्रेम करते हैं?' राजा चकित होकर बोले, 'अवश्य ही करता हूँ।' रानी ने फिर प्रश्न किया, 'यदि वह किसी दुर्घटना की शिकार हो जाए तो क्या आपको दुख न होगा?' राजा ने स्वीकार किया कि उन्हें दुख होगा। अब वे बुद्ध की बात से पूर्णतः सहमत हुए। वस्तुतः लगाव या प्रेम अल्पकालीन आनंद देता है। प्रिय पात्र के अभाव या उसे कष्ट में देख यह प्रेम दुख में परिणत होकर तकलीफ देता है, इसलिए अपने प्रेम को संयम की लगाम से कस कर रखें।

फिलीपिंस। ब्र.कु.डॉ.निर्मला, ब्र.कु.मीरा, ब्र.कु.रजनी, ब्र.कु.भावना, ब्र.कु.चार्ली तथा एशिया क्षेत्र के नेशनल व सेंटर को-आर्डिनेटर्स समूह चित्र में।

यात्रा अमरनाथ की..

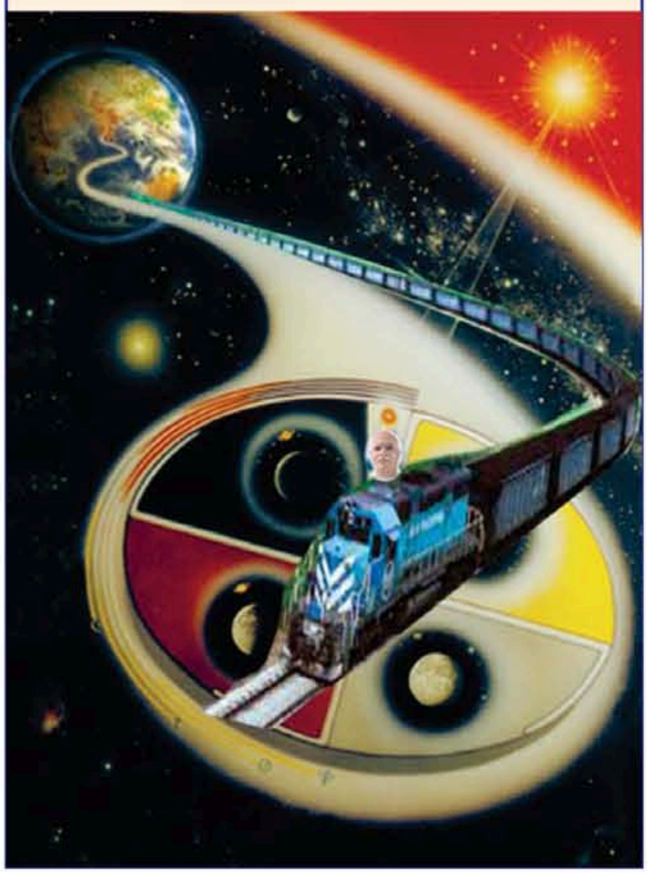

सतयुग व त्रेतायुग स्टेशन तक तो सभी यात्री दिव्य गुणों के आभूषणों से सजे-धजे थे, सभी खुश थे। आराम से यात्रा कर रहे थे। आगे जब द्वापर युग का स्टेशन आया वहां से पाँच लुटेरे काम, क्रोध , लोभ,मोह और अहंकार चने बेंचने के बहाने ट्रेन में चढ़ गये। उन पाँचों ने चढ़ते ही अपना धंधा शुरू कर दिया।

संसार में अनेक यात्राएँ होती है जैसे विदेश यात्रा, हज यात्रा, वैष्णों देवी यात्रा, अमरनाथ की यात्रा आदि आदि। आज आपको ऐसी यात्रा के बारे में बताने जा रहे हैं जो अपने आप में अनोखी है। इस यात्रा द्वारा ही सच्चे अमरनाथ परमात्मा शिव से सच्चा मिलन हो सकता है। इस यात्रा के लिए ट्रेन **सतयुग** से चलती है। यह ट्रेन **पाँच** प्लेटफार्मो से गुजरती हुई जाती है। 1. सतयुग 2. त्रेतायुग 3. द्वापरयुग 4. कलियुग. 5. संगमयुग।

इसका आखरी पड़ाव **संगमयुग** प्लेटफार्म है। जहाँ से संगम एयरपोर्ट से प्लेन द्वारा अमरनाथ जा सकते है क्योंकि दूरी बहुत थी तीन लोक से पार जाने की यात्रा थी। ट्रेन सतयुग पर खड़ी थी। एक बार यह यात्रा कर ली मानो उनकी जन्म-जन्मान्तर की भगवान को पाने की जो प्यास है वह बुझ जायेगी। अमरनाथ सदाकाल के लिए अमर बना देंगे। तो आइए यह अनोखी यात्रा कब शुरू हुई और कब समाप्त होगी यह जान लें ....।

भगवान ने संसार में हमें जब भेजा तब **सुख-शान्ति** से भरपूर करके भेजा था। उन्होंने संसार रूपी शताब्दी एक्सप्रेस ट्रेन चलाई। जिसका निर्माण पृथ्वी, अग्नि, जल, आकाश एवं वायु के मैटेरियल से करवाया। रेलगाड़ी का सफर पाँच हजार कि.मी. जिसमें सभी डिब्बे एयर कंडीशन के होने के कारण यात्री भी **वी.आई.पी. देवता श्रेणी** के 9 लाख यात्री टिकट कटा कर ट्रेन में बैठे हुए थे। सतयुग रेलवे स्टेशन से गाड़ी छूटी। गाड़ी आगे बढ़ी 1250 कि.मी. चलने के पश्चात दूसरा रेलवे स्टेशन त्रेतायुग आया जहाँ से 33 करोड़ यात्री बैठे, ट्रेन चलती रही आगे बढ़ती रही। यात्री दिव्य गुणों के आभूषणों से सजे-धजे थे, सभी खुश थे। आराम से यात्रा कर रहे थे। आगे द्वापर युग का स्टेशन आया वहां से **पाँच लुटेरे काम, क्रोध ,लोभ,मोह और अहंकार** चने बेंचने के बहाने ट्रेन में चढ़ गये। उन पाँचों ने चढ़ते ही अपना धंधा शुरू कर दिया। कोई ठगी की चाय, कोई चोरी की कचौड़ी तथा ईर्ष्या की आइस्क्रीम बेच रहा था। कोई अपवित्रता के बिस्कुट बेच रहा था। कोई झूठ के समोसे जिसमें देहभान की नशीली दवा भरी थी। यात्रियों ने यह चीजें जीवन में पहली बार देखी, इसलिए उनको लेने की उत्सुकता हुई। उन्होंने जैसे ही लेकर खाना शुरू किया तो यात्री एक-एक करके अज्ञान निन्द्रा में सोते गए। लुटेरों ने मौका पाकर दिव्य गुणों के जेवर लूट लिए। जब तक उनकी नींद खुली तब तक सबकुछ छिन चुका था। कलियुग के स्टेशन पर आने के पश्चात वहां पर यात्रा के लिए भारी भीड़ उमड़ पड़ी। लगभग 600 करोड़ यात्री चढ़ गए। गाड़ी में जगह का अभाव होने के कारण यात्री ट्रेन के उपर चढ़ गये। अन्तिम स्टेशन आने के थोड़ा पहले ही अंधविश्वास व गुटके के नक्सलवादियों ने सत्यता की पटरी को सम्प्रदायिकता की बारूदी सुरंग बिछाकर उड़ा दिया। परिणाम स्वरूप ट्रेन दुर्घटनाग्रस्त हो गई, जिसमें अनेक यात्री घायल हो गये तथा कुछ गम्भीर रूप से घायल हो गये और अमरनाथ यात्रा खटाई पड़ गई चारों तरफ डर, भय तथा घबराहट का माहौल था। सभी दु:खी अशांत होकर अपने सच्चे अमरनाथ परमात्मा को पुकारने लगे। भगवान से देखा नही गया वह तुरन्त अपने निजी वाहन **ब्रह्मा** के तन में प्रवेश करके अपने वत्सों से मिलने आ गये। उनके आते ही लुटेरे काम, क्रोध, लोभ,मोह और अहंकार भाग गये। ईश्वर ने तुरन्त एरोप्लेन और रॉकेट मंगाया और सभी बच्चों को वापस अपने घर परमधाम में लाने की तैयारी में लग गये। जब बच्चों ने भगवान से पूछा कि आपने प्लेन तथा रॉकेट क्यों मँगाया तो उन्होंने कहा कि जैसे मेरा नाम ही है शिव भोला भाला, मैं ब्रह्माण्ड को छोड़ आपकी पुकार सुन दौड़ा चला आया। लेकिन यहाँ आने पर देखा कि जिन्होंने मुझे पहचाना वह देखते ही मुझसे चिपक गए लेकिन कई बच्चों की याददाश्त चले जाने के कारण संशय में है कि ये ही हमारे असली पिता है या नहीं। इसलिए मैने सोचा कि जो मुझे जानेंगे एवं मेरा कहना मानेंगे वह ही मेरी बाँहों के रॉकेट में जायेंगे और उन्हें सतयुग,त्रेतायुग में आने के लिए विश्व की बादशाही का विशेष पैराशूट मिलेगा लेकिन जो मुझे जानेंगे नहीं, मेरी मानेंगे नहीं उन्हें रिमाण्ड पर लेकर के दु:ख के एरोप्लेन में जायेंगे। उन्हें हमारे दूत दो युगों तक नीचे नहीं उतरने देंगे। उन्हें द्वापर युग से बिना सूट-बूट के नीचे भेज देंगे। यह कोई कल्पना नहीं बल्कि सच्चाई है जिसका परमात्मा ने इस धरा पर आकर रहस्य खोला है कि जीवन एक यात्रा है जिसमें शरीर एक ट्रेन की तरह है और आत्मा उसका ड्राइवर है। आज चारो तरफ दु:ख अशान्ति बढ़ती जा रही है कारण किसी को भी ईश्वरीय याद का सिग्नल नहीं मिल रहा है। जिस कारण धर्म के नाम पर, जाति के नाम पर, भाषा के नाम पर एक्सीडेंट बढ़ते जा रहे है। परिणाम स्वरूप पापाचार अत्याचार बढ़ गया है। अब परमात्मा कहते है पापों को मिटाने के लिए सच्चे अमरनाथ परमात्मा की यात्रा की आवश्यकता है जिसे रूहानी यात्रा कहते है। तो आइये **प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय** के एयरपोर्ट पर जहां यात्रा के लिए पहला जत्था रवाना होने जा रहा है। आप एयरपोर्ट के लिए स्थानीय ऑफिस से अमरनाथ जाने के लिए रिजर्वेशन करा सकते है। खुद निर्णय लीजिये आपको प्लेन में जाना है या रॉकेट में ? टिकट लेने का आखरी समय कुछ वर्ष और फिर सीटें फुल का बोर्ड लग जायेगा।

त्रिवेन्द्रम। प्रसिद्ध निर्देशक व कवि कवालम नारायण पनिकेर, प्रसिद्ध लेखक नीला पद्मनाभम्, कानायी कुंजीरामन्, इसरो के साइंटिस्ट वी.कृष्णनन्, कृषि वैज्ञानिक गोपीमणि जी, निर्देशक सूर्य कृष्णमूर्ति, प्रसिद्ध गीतकार एजाचेरी रामचन्द्रन तथा अन्य।

.रानियां। आध्यात्मिक सेमीनार में प्रमुख समाज सेवक सुभाष गोयल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.डॉ.सीमा तथा ब्र.कु.कमलेश।

रीवा। ग्रामीण सेवा योजना में युवाओं की साइकिल यात्रा एवं व्यसन मुक्ति अभियान में मंचासीन जिला कलेक्टर एस.एन.रुपला, डॉ.ए.के.मिश्रा, ब्र.कु.निर्मला, प्रतिभागी तथा अन्य।

सरमाण - वडोदरा। स्नेह सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए योगाचार्य हरीश वैद्य, ब्र.कु.डॉ.निरंजना, ब्र.कु.दीपिका, ब्र.कु.नरेन्द्र, रीया बहन तथा ब्र.कु.प्रीति।

सिकन्दरामऊ। मातेश्वरी जी के स्मृति दिवस पर इंसपेक्टर अजीत सिंह, डॉ.दया शंकर तथा ब्र.कु.विनीता।

सुजानपुर-टोहरा। हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह तथा विधायक राजेन्द्र राजा को गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु.प्रेम तथा ब्र.कु.सन्तोष।

वाधलधरा-वलसाड। कॉलेज के युवाओं को राजयोग मेडिटेशन के महत्व पर समझाते हुए ब्र.कु.रोहित।

पणजी-गोवा। सेल्फ मैनेजमेन्ट ट्रेनिंग के बाद ग्रुप फोटो में कदम्बा ट्रान्सपोर्ट कार्पोरेशन गवर्नमेन्ट ऑफ गोवा के डेप्युटी जनरल मैनेजर घाटे साहब, ब्र.कु.सुरेखा, ब्र.कु.निरजा तथा अन्य।

पिलुवा-नेपाल। वृक्षारोपण के पश्चात् वन अधिकृत एसोसिएशन संघ के अध्यक्ष अमरदेव यादव, राजकुमार अर्याल एवं ब्र.कु.मैया।

पीथमपुर-इन्दौर। व्यसन मुक्ति अभियान उद्घाटन करते हुए एस.पी.विक्रम सिंह, टी.आई.दुबे, ब्र.कु.सुनिता तथा ब्र.कु.वीका।

पूणे। कार्यक्रम में मंच पर ब्र.कु.सरिता, डॉ.श्रीमन्त साहू, प्रताप रावजी पवार तथा अशोक जैन।

राजकोट। ब्रह्माकुमारीज़ एवं पंचशील स्कूल द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित 'ट्राफिक समस्या जागृति' सेमिनार में उपस्थित पुलिस कमिश्नर एच.पी.सिंह, आर.टी.ओ.इन्स्पेक्टर जे.वी.शाह, ब्र.कु.अंजु, डॉ.वाडोदरीया, बच्चे तथा अन्य।

वारंगल-शिव नगर। नवीन सेवाकेन्द्र निर्माण हेतु भूमि पूजन में उपस्थित आन्ध्र प्रदेश के मंत्री बी.सारय्या को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.विमला एवं ब्र.कु.श्रीलता। साथ हैं डिप्युटी मेयर वाय.रविन्द्र, ब्र.कु.सविता, ब्र.कु.शशीधर तथा अन्य।

विश्व कल्याण का ...

-पेज 1 का शेष

प्राकृतिक है और यहाँ हर ओर आध्यात्मिकता पसरी हुई है। हम अगर अपने मन का सकरात्मक परिवर्तन करना चाहते है तो इसे अच्छी तरह समझना जरूरी होगा। हमें देहाभिमान से आत्माभिमान की स्थिति में जाना होगा। मन के बारे में हमें मेडिकल की कक्षाओं में नहीं बताया गया। इसके बारे में अच्छी रीति समझने के लिए यह एक उत्तम स्थान है। मन को समझकर हम बीमारियों को ही नहीं बल्कि उसके कारणों को भी समाप्त कर पाएंगे। बीमारियों से बचे रहने के लिए व्यायाम के साथ साथ ध्यान की भी अत्यंत आवश्यकता होती है।

मेडिकल विंग के उपाध्यक्ष डॉ प्रताप मिड्ढा ने कहा कि व्यसन मुक्ति के बिना सर्वांगीण स्वास्थ्य की कल्पना नहीं कर सकते। इसके लिए पहले चिकित्सकों को रोल मॉडल बनना होगा। तनाव मुक्ति के लिए ध्यान का अभ्यास परमावश्यक है। गलत जीवन पद्धति के कारण ही बीमारियाँ होती है। जीवन शैली में परिवर्तन करके हम इनसे मुक्त हो सकते है। ग्रामीण भारत के लोगों को शिक्षित करके हम उन्हें अनेक बीमारियों से बचा सकते है। शाकाहार एवं सकारात्मक चिंतन एक कारगर दवा है। डॉक्टरों को स्वास्थ्य प्रदाता के रूप में जाना जाए, ऐसा प्रयास करें।

एम्स के सीटीवीटी प्रभाग के विभागाध्यक्ष डॉ बलराम ऐरन ने कहा कि हमें रोगियों का सिर्फ शारीरिक स्वास्थ्य ही नहीं बल्कि मानसिक स्वास्थ्य भी सुधारने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। हमें खुद को निमित्त मानकर अपना कार्य संपन्न करना चाहिए क्योंकि हम परमात्मा के निर्देश पर ही यह सब कर रहे है। सकारात्मकता सफलता की गारंटी है।

मेडिकल विंग की संयुक्त सचिव ब्र.कु.डॉ निरंजना ने कहा कि आपको यहाँ एक नये आयाम अर्थात ध्यान के बारे में जानने का मौका मिलेगा। अपने विचारों में परिवर्तन से जीवन ही परिवर्तित हो जाता है। मगर इसके लिए आंतरिक शक्ति चाहिए। इस स्थान की आध्यात्मिकता एवं प्राकृतिक सौंदर्य आंतरिक बल प्राप्त करने में काफी मददगार होगा।

मेडिकल विंग के कार्यकारी सचिव डॉ बनारसी लाल साह ने अतिथियों का स्वागत किया तथा विंग के संगठन सचिव डॉ गिरीश पटेल ने कार्यक्रम का संचालन किया।

जनकल्याण के...

-पेज 12 का शेष

प्रेरणादायी बनेगा। आज के युवाओं के लिए यह एक मिसाल है। मनुष्य का साथ तो कभी भी छूट सकता है परन्तु परमात्मा का साथ हमेशा और हर पल रहता है। उन्होने उनके परिवारजनों का धन्यवाद करते हुए कहा कि यह सुखद है कि इन बहनों के माता-पिता ने खुशी से अपनी बेटियों को इस मार्ग के लिए स्वीकृति देकर अलौकिक कन्यादान किया है।

संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने कहा कि भारत में ऐसे ही महान कार्यों के कारण नारी को शक्ति और दुर्गा का अवतार माना गया है। यदि विश्व में ऐसी युवा बहनें यह संकल्प लें कि नया मूल्यनिष्ठ समाज बनाना है तो निश्चित ही पूरा विश्व बदल जायेगा।

संस्था के महासचिव ब्र.कु.निर्वैर ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था विश्व में एकमात्र ऐसी संस्था है जिसकी बागडोर बहनों और माताओं के हाथ में है। संस्था के ग्राम विकास प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु.मोहिनी, अति.सचिव ब्र.कु.रमेश, सूचना निदेशक ब्र.कु. करूणा, ब्र.कु.मुन्नी, ब्र.कु.भूपाल व ब्र.कु.आत्मप्रकाश ने भी विचार व्यक्त किए।

समर्पण का महत्व - ब्रह्माकुमारी संस्था में जो आजीवन समाज सेवा की शपथ लेते हैं उनका समर्पण करवाया जाता है। समर्पण के बाद वे शिव परमात्मा के बताए मार्ग पर चलेंगे और उन सभी नियमों का पालन करेंगे जो संस्था द्वारा निर्धारित हैं। समर्पण से पूर्व खुद की स्वेच्छा, माता-पिता के सहमति पत्र और स्थानीय सेवाकेन्द्र की बहनों की स्वीकृति लेनी होती है। बहनों को पहले साप्ताहिक कोर्स कराकर उन्हें आत्मा, परमात्मा और कर्म की गहन गति के बारे में जानकारी दी जाती है। कोर्स के बाद कम से कम एक या दो साल संस्था का नियमित विद्यार्थी होने के बाद कम से कम दो साल संस्था का नियमित विद्यार्थी होने के पश्चात उन्हें टीचर्स ट्रेनिंग दी जाती है। जो माउण्टआबू मुख्यालय में तीन मास की होती है। फिर उन्हें व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए देश में किसी भी सेवाकेन्द्र की मुख्य बहनों के सानिध्य में रखा जाता है। ईश्वरीय ज्ञान के कम से कम पांच वर्ष पूरे होने के बाद उन्हें समर्पण के योग्य समझा जाता है।

कमजोरी के संस्कार को त्यागें

जैसे आजकल की दुनिया के अंदर हम ये बात बार-बार सुनते हैं कि कई व्यक्ति कहते हैं कि हम गुस्सा करना चाहते नहीं हैं लेकिन आ जाता है। तो ये बात क्या सिद्ध करती है? कि गुस्सा करना चाहता नहीं हूँ, क्रोध करना चाहता नहीं हूँ लेकिन क्रोध आ जाता है अर्थात वो प्रकृति, वो संस्कार उसको मजबूर कर रहा है। गुस्सा करने के लिए। तो इस प्रकार कमजोरी के संस्कार हमें अपनी तरफ खीचेंगे और मजबूर करेंगे। जो कमजोरी के संस्कारों के वश जीवन जीता है, उसकी गति क्या हो सकती है, वह नष्ट हो जायेगा। वो परमात्म कृपा को अनुभव नहीं कर पाता है। इसलिए हे भारत, यहां अर्जुन को भारत क्यों कहा गया, क्योंकि एक अर्जुन की बात नहीं है, सारे भारतवासी अर्जुन हैं। इसलिए हे भारत, सभी भारतवासी संपूर्ण भाव से उस ईश्वर की शरण ग्रहण करो, उसकी कृपा से परम शांति को प्राप्त करो और इस प्रकार अपनी कमजोरी के जो संस्कार हैं, स्वभाव है, उसको खत्म कर दो, ताकि वो हमें मजबूर न करें प्रवृत्त होने के लिए। उसी के साथ भगवान कहते हैं इस प्रकार ये गुह्य गोपनीय ज्ञान मैंने तेरे लिए कहा है। इसलिए मैं तेरे हित के लिए कहूंगा। भगवान यहां दोस्ती का भाव व्यक्त करता है और कहते हैं - तू मेरा मित्र है, अति प्रिय है इसलिए मैं तुम्हें हित की बात ही कहूंगा। इस पर पूर्ण विचार करने के पश्चात तेरी जैसी इच्छा हो वैसा करना। इतना कहकर भगवान भी न्यारा हो जाता है। इतनी अच्छी ज्ञान की बात सुनाने के बाद भी हमारे ऊपर वह थोपने का प्रयास नहीं करता है कि तुम्हें मेरी बात को मानना ही चाहिए - नहीं। कितनी निर्माणता व्यक्त करते हैं। वे हमें सिखाने का प्रयत्न करते हैं। ये गुह्य गोपनीय ज्ञान मैंने तेरे लिए ही कहा है, क्योंकि तू मेरा अति प्रिय

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

है। इसलिए मैं तुम्हें हित की बात ही कहूंगा। परंतु फिर भी इस पर पूर्ण विचार करने के पश्चात ही जैसी तेरी इच्छा हो, वैसे करना। इतना न्यारा, निराला है परमात्मा।

फिर भगवान कहते हैं कि मेरा चिंतन करने से, मेरा अनन्य भक्त बनने से तुम निश्चित रूप से मेरे पास आओगे, ये मेरा वचन है। भगवान भी वचनबद्ध हो जाता है। कितना सुंदर ये एक आश्वासन मिलता है कि अगर हम ईश्वर का चिंतन करेंगे, उसके अनन्य भक्त बन जायेंगे, तो निश्चित ही ईश्वर के पास चले जायेंगे। ये भगवान का वचन है, हमारे लिए। इसलिए हे अर्जुन, सर्व धर्मों का परित्याग अर्थात् जो अनेक हद के धर्म में आ गये है कि ये मेरा धर्म है, ये तेरा धर्म है, या इस प्रकार की भावनाओं में हम जो आ गये हैं, तो सर्व धर्म का परित्याग करके,तुम मेरी शरण में आ जाओ। इससे श्रेष्ठ धर्म और कोई नहीं है।

धर्म माना जो हमें श्रेष्ठ आचरण करना सिखाए, धर्म माना जो जीवन में श्रेष्ठ धारणा करना सिखाए, ये है सच्चा धर्म। बाकी धर्म के नाम पर लड़ाई-झगड़े को बढ़ावा देना ये कोई धर्म नहीं है। इसलिए भगवान कहते हैं तुम सर्व धर्म का परित्याग करके मेरी शरण में आ जाओ, तो मैं तुम्हें सर्व पापों से मुक्त कर दूंगा। ये भी भगवान का वचन हम आत्माओं के प्रति है। सब दैहिक धर्म को छोड़कर एक ही धर्म हमारा है कि मैं आत्मा परमात्मा की संतान हूँ और परमात्मा की संतान होने के नाते मेरे कर्म कैसे होने चाहिए, मेरी विचार धारा कैसी होनी चाहिए? मेरी जीवन की धारणायें कैसी होनी चाहिए? सब स्पष्ट हो जाती है।

जिस प्रकार एक राजा के बेटे को सिखाना नहीं पड़ता है कि तू राजा का बेटा राजकुमार है इसलिए तुम्हें कैसे चलना चाहिए? कैसे बोलना चाहिए? कैसे खाना चाहिए? कैसे व्यवहार करना चाहिए? सिखाया नहीं जाता है और यह सीखाने वाली बात नहीं है। लेकिन जैसे ही यह स्मृति अंदर में रहती है कि मैं राजा का बेटा राजकुमार हूँ। तो अपने आप वो संस्कार राजसी होने लगते हैं। अपने आप उसके हर बोल-चाल, व्यवहार, कर्म में वो राजसी भाव झलकने लगता है।

स्वतन्त्रता के पैमाने

सर्वांगीण स्वतन्त्रता तो मनुष्य को सतयुग में ही प्राप्त होती है। सृष्टि की इस अवस्था में सब प्रकार की स्वतन्त्रता सर्वोन्मुखी अथवा सार्वभौम रूप में सभी को सुख-शान्ति से प्रसन्न-वदन और प्रसन्न चित्त करती थी।

हर वर्ष जब हम स्वतन्त्रता दिवस के रूप में राष्ट्रीय उत्सव मनाते हैं तो लोगों में पहले की भेंट में कम उत्साह और कम हर्ष मालूम होता है और जगह-जगह लोग दु:खित स्वर से कहते हुए सुने जाते हैं कि यह स्वतन्त्रता झूठी है, हमें इससे सुख नहीं मिलता है। अत: यह एक गम्भीर विचार और मूल्यांकन का विषय है कि क्या हमारी स्वतन्त्रता सच्चे अर्थों में स्वतन्त्रता है भी या हम किसी कृत्रिम, नीरस और विकृत वस्तु को सच्चा मानकर पुरूषार्थ-हीन होकर बैठ गये हैं?

सच्ची और सर्वांगीण स्वतन्त्रता की व्याख्या - अब इस विषय पर हमें परमपिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा समझाया है कि सच्ची और सर्वांगीण स्वतन्त्रता में मुख्य रूप से जो स्वतन्त्रता शामिल हैं, उनकी व्याख्या करेंगे –

1. शारीरिक स्वतन्त्रता – हम देखते हैं कि मनुष्य को आये दिन किसी-न-किसी प्रकार के छोटे-बड़े रोग सताते रहते हैं या शारीरिक दुर्बलता, अंगहीनता, दुर्घटना आदि पीड़ित करते हैं। और कोई क्लेश न हो तो बुढ़ापा ही आकर दबोच लेता है या अकाल मृत्यु या कष्टदायक मौत ही अपने शिकंजे में डाल देती है। अगर मनुष्य स्वस्थ न हो तो उसे जीवन नीरस और बोझिल मालूम होता है और अन्य किसी भी प्रकार की स्वतन्त्रता में उसकी रूचि नहीं रहती। शारीरिक स्वतन्त्रता का इतना मूल्य और महत्व है कि मनुष्य रोगों से छूटने के लिए अपना सारा धन लुटाने के लिए भी तैयार हो जाता है। आप देखेंगे कि समाज में इस स्वतन्त्रता की ओर लोगों का इतना ध्यान है कि जब कहीं दो परिचित व्यक्ति मिलते हैं या पत्र-व्यवहार करते हैं तो शारीरिक 'कुशल-मंगल' जरूर पूछते हैं।

2.आर्थिक स्वतन्त्रता - आर्थिक स्वतन्त्रता से हमारा भाव यह है कि मनुष्य निर्धनता से पीड़ित न हो, धन की कमी के कारण वह दु:खित और भ्रष्टाचारी, अन्यायकारी या चोर-चकार न हो। उसके पास पर्याप्त धन हो, धन कमाना उसके लिए चिन्ता या दु:ख का विषय न हो और उसके जीवन के बड़े भाग को नष्ट न कर दे। उसके धन पर चोरों और डाकुओं की नज़र न लगी रहे, न धन के बंटवारे के लिए झगड़े हों न मुकदमाबाज़ी। धन का मूल्य मनुष्य और मनुष्य के स्वमान से अधिक न हो और सरकार भी हर आये दिन टैक्सों द्वारा उसे तंग न करे। आर्थिक स्वतन्त्रता इतनी महत्वपूर्ण है कि इसके एक-न-एक पहलू को लेकर आज आन्दोलन होते हैं और लोग शरीर भी कुर्बान कर देते हैं।

3. मानसिक स्वतन्त्रता – अगर मनुष्य का स्वास्थ्य ठीक हो, उसके पास धन की भी कमी न हो परन्तु यदि उसे किसी-न-किसी प्रकार की चिन्ता लगी रहे तो उसका धन-धान्य उसे नहीं सुहाता, वैभव और महल-माड़ी उसे नहीं भाता। मनुष्य के मन में अगर किसी संकट अथवा दुर्घटना का भय बना रहे या उसे सोचने विचारने की स्वतन्त्रता न हो तो भी उसका जीवन दु:खी हो जाता है, फिर विशेष बात तो यह है कि यदि मनुष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष आदि किसी विकार अथवा मानसिक व्याधि के वश में हो तब तो वह एक पूरा असुर अथवा राक्षस बन जाता है और अपने तथा दूसरों के जीवन को नष्ट करने में लग जाता है। मन की खुशी, बुद्धि की सात्विकता और विचारों की पवित्रता एक बहुत बड़ी चीज़ है और आप देखेंगे कि समाज में सुधार, मनोविद और शिक्षा आदि के सभी साधन मन को पवित्र एवं चरित्रवान बनाने तथा खुश करने के लिए ही हैं।

4. सम्बन्धों के बन्धन से स्वतन्त्रता – मनुष्य का अन्य कई-एक लोगों से सम्बन्ध तो रहता ही है। वे सम्बन्ध उसके लिए सुखदायक और सम्बन्धी सहयोगी भी सिद्ध हो सकते हैं और वही सम्बन्ध उसके लिए चिन्ता का विषय, बोझ का सामान, बन्धन की जंजीरें भी सिद्ध हो सकते हैं। सास-बहू के झगड़े, पुरानी पीढ़ी और नयी पीढ़ी का विवाद, बच्चों की उद्दण्डता, विद्यार्थियों की अनुशासनहीनता, कर्मचारियों की कर्तव्य-विमुखता और तंग करने की नीति – ऐसे कई विकृत सम्बन्ध मनुष्य की नाक में दम कर देते हैं। पत्नी कहती है – 'आपका कर्तव्य है कमा कर लाना और घर की सामग्री जुटाना और बाल-बच्चों की समस्याओं की ओर देखना तथा मेरी आवश्यकताओं तथा आशाओं को पूरा करना।' माता-पिता कुछ और कर्तव्य जतलाते हैं, दफ्तर के अफ़सर कुछ और नियम जतलाते हैं। मनुष्य सोचता है कि सभी सम्बन्धी स्वार्थी हैं, आज सहानुभूति और सहृदयता का संसार से जनाज़ा उठ चुका है। सम्बन्ध विकृत होने के कारण मनुष्य परेशान हो जाता है और आये दिन हम देखते हैं कि मुकदमाबाज़ी होती है, पुलिस को बीच-बचाव करना पड़ता है या कई मनुष्य तो तंग आकर शरीरान्त करने के लिए भी तैयार हो जाते हैं। सम्बन्धों में स्नेह, सौहार्द, सहानुभूति, सहकारिता व सह अस्तित्व का स्वाभाविक वातावरण हो तो मनुष्य का जीवन बहुत सुखी होता है।

5. प्रकृति के बन्धन और उत्पात से स्वतन्त्रता – मनुष्य के पास धन भी हो और उसका शरीर भी स्वस्थ, सुन्दर तथा सुडौल हो और सम्बन्धों में भी स्नेह हो परन्तु यदि प्रकृति का प्रकोप उस पर बना रहे और कभी अनावृष्टि, कभी अतिवृष्टि, कभी दुर्भिक्ष एवं अकाल और कभी बाढ़, कभी अग्नि काण्ड, तो उसका जीवन अस्त-व्यस्त, संकटमय, अरक्षित और परतन्त्र हो जाता है। प्रकृति का मूड मनुष्य के मूड को भी थोड़ा बहुत प्रभावित करता है और यदि प्रकृति मनुष्य को परेशान करती रहे तो मनुष्य अपने को हीन-दीन और पराजित, पर-वश तथा पराधीन-सा अनुभव करने लगता है। आज हम देखते हैं कि कभी तो प्रकृति का यह हाल है कि इतनी गर्मी पड़ती है कि मनुष्य हाँफने लगता है और पसीने से तरबतर हो जाता है और कभी इतनी सर्दी पड़ती है कि वह ठिठुर जाता है या कँपकँपी पर कंट्रोल नहीं कर सकता। यह प्रकृति की दासता ही तो है कि गर्मी के वशीभूत होकर मनुष्य को पंखे और बर्फ का सहारा लेना पड़ता है और सर्दी से बचने के लिए आग की या गरम कोट की शरण में जाना पड़ता है। तो प्रकृति के बन्धनों तथा उत्पात से स्वतन्त्रता का अर्थ है – प्रकृति के असंतुलन, तमोगुण, रजोगुण और आक्रमण से स्वतन्त्रता।

6. राजनीतिक स्वतन्त्रता – राजनीतिक परतन्त्रता तो सभी को ज्ञात है। राजनीतिक परतन्त्रता में तो यह देश सैंकड़ों वर्ष रहा है। दूसरे देशों के लोगों ने आकर यहाँ का धन-धान्य खूब लूटा, यहाँ के महल-मन्दिरों को बिगाड़ा और लोगों को घरों से उजाड़ा तथा उन्हें तबाह करने की कोशिश की। राजनीतिक स्वतन्त्रता को महत्व देने के कारण आज हरेक देश की सरकार एक बहुत बड़ी सेना रखती है। परन्तु फिर भी राजनीतिक स्वतन्त्रता अखण्ड, निर्विघ्न, निर्विवाद तथा अटल नहीं है। पड़ोसी देशों से आक्रमण की आशंका बनी रहती है और अन्दरूनी उपद्रवियों से भी तनाव बना रहता है। राजनीतिक स्वतन्त्रता का सच्चा स्वरूप तो यह है कि एक अटल, अखण्ड, निर्विघ्न और अति सुखकारी सार्वभौम अथवा चक्रवर्ती सत्ता हो, राज्य करने वाला जनता को अपने पुत्रों की तरह प्यारा मानने वाला और धर्मानुकूल आचरण वाला हो तथा प्रजा भी दैवी मर्यादा का पालन करने वाली हो तथा राजा-प्रजा सम्बन्ध अत्यन्त निर्मल, घनिष्ठ एवं प्रेम-पूर्ण हो।

क्या ऐसी सच्ची स्वतन्त्रता स्वप्न है या सत्य है?

ऊपर हमने ईश्वरीय रहस्योद्घाटन के आधार पर स्वतन्त्रता-सम्बन्धी जिन तत्वों की व्याख्या की है, उन्हें पढ़कर शायद कई लोग सोचेंगे कि यह सभी प्रकार की स्वतन्त्रता एक-साथ तो कदापि सभी को सुलभ नहीं हो

-शेष पेज 10 पर

हाथरस। 'विश्व सद्भावना महोत्सव' कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए विधायक देवेन्द्र अग्रवाल मंचासीन हैं ब्र.कु.सविता व ब्र.कु.सीता।

जयपुर-राजापार्क। सेवाकेन्द्र के वार्षिक उत्सव के उपलक्ष्य में पधारे हुए मेहमानों को ईश्वरीय सन्देश देते हुए ब्र.कु.जीत।

ककोड़-छर्रा। जिला न्यायाधीश राजीव कुमार को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रेखा तथा अन्य।

जलगांव-जामोद। गुरूदेव सेवा आश्रम के आचार्य हरिभाऊ वेरुलकर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सुनिता।

बरनाला। जगदम्बा मातेश्वरी के पुण्य स्मृति दिवस पर फाइनेन्स कम्पनी के डायरेक्टर शान्ती स्वरूप चौधरी अपने विचार रखते हुए।

नवॉशहर-पंजाब। अन्तर्राष्ट्रीय तंबाकू दिवस पर हेल्थ डायरेक्टर एच.एस.बाली को व्यसन मुक्ति प्रदर्शनी का अवलोकन कराते हुए ब्र.कु.राम तथा डॉक्टर्स।

धामनोद-म.प्र.। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.प्रीति तथा ब्र.कु.दयाराम।

आपकी खुशी आपके पास

क्या आप अशांत हैं, क्या आप अवसाद के दौर से गुजर रहे हैं, क्या आपके मिजाज को क्रोध ने वश कर लिया है, क्या आप तनाव से ग्रस्त हैं। क्या आपने कभी सोचा है मन की शांति के लिए रिमोट कंट्रोल आपके पास है। देखिए नॉन स्टॉप, बिना किसी विज्ञापन के, आध्यात्मिकता के गुह्य रहस्यों को स्पष्ट करता हुआ ''पीस ऑफ माइंड चैनल, आपके शहर में उपलब्ध है। Enquiry Mob. 8140211111 channel-697

सूचना- ओमशान्ति मीडिया में सेवा के लिए हिन्दी व अंग्रेजी भाषा की जानकारी रखने वाले भाइयों की आवश्यकता है। ईमेल, वेबसाइड तथा साफ्टवेयर की जानकारी रखने वाले भाई की भी आवश्यकता है। ईश्वरीय सेवा के इच्छुक भाई अपना पूरा डाटा इस ईमेल पर भेजें -
E-mail- mediabkm@gmail.com, Mob.-8107119445

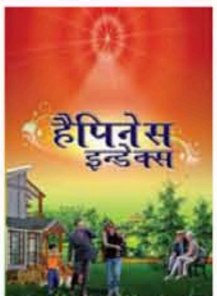

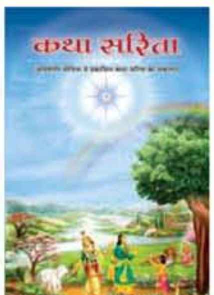

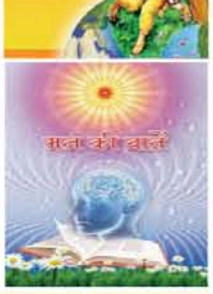

सूचना

आप सभी भाई-बहनों की मांग पर राजयोग प्रवचन माला की पुस्तक 'राजयोग मेडिटेशन' नवीन संस्करण के साथ, भगवान कौन? की गीता का आध्यात्मिक रहस्य पुस्तक हैप्पीनेस इंडेक्स, कथा सरिता उपलब्ध है। इसे आप ओम शांति मीडिया, शांतिवन कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

प्रश्न : मैं एक अधर कुमार सेवाधारी हूँ। मैं यह जानना चाहता हूँ कि सेवा की सफलता धन से होती है या त्याग से व सादगी से होती है? कई लोग धन खर्च करके सेवा करते हैं परन्तु कोई भी ज्ञान में चलता नहीं।

उत्तर : अध्यात्म की शक्ति त्याग व सादगी में है। धन की अधिकता अध्यात्म के तेज को छुपा लेती है। फिर धन की शक्ति से वारिस तो नहीं निकल सकते। सेवा में धन बहाना नहीं चाहिए। त्याग व सादगी से ही देवात्माओं को आकर्षण होता है। क्योंकि हमें दैवी कुल की आत्माओं को पुन: देवतुल्य बनाना है। उसमें सबसे ज्यादा काम करती है हमारी पवित्रता व योग बल। पवित्रता की तरंगें देव कुल की आत्माओं को आकर्षित करती हैं। यदि पवित्रता कम तो सेवा का परिणाम भी कम होगा।

वातावरण में यदि त्याग व योग के वायब्रेशन्स होंगे तो देव कुल की आत्माएं खिंच खिंच कर आयेंगी। इसलिए जहां सेवा हो, वहाँ योग का कार्यक्रम भी चलता रहे तो ज्यादा सफलता मिलेगी। सेवास्थान के वायब्रेशन्स व सेवा करने वालों के वायब्रेशन्स जितने श्रेष्ठ होंगे उतनी ही सेवा सफल होगी। इसलिए ध्यान रहे, सेवा में कभी भी टकराव न हो। मनमुटाव होने से सेवा का परिणाम जीरो पर आ जाएगा।

बिना धन के योग-बल से यदि आप सेवा करना चाहते हैं तो एक, तीन या पाँच लोगों का ग्रुप बनाकर एक घण्टा प्रतिदिन 21 दिन तक योग करें व योग के बाद देव कुल की आत्माओं का आह्वान करें कि यहां चारों ओर जो भी देव कुल की आत्माएँ हों, वें भगवान से मिलने आ जाओ। योग से पूर्व इन स्वमानों का अभ्यास करें...मैं एक महान आत्मा हूँ, इष्ट देव/देवी हूँ, विश्व कल्याणकारी हूँ व पूर्वज हूँ। इससे सेवा में वन्डरफुल सफलता होगी।

प्रश्न : मैं एक कुमार हूँ। पहले मैं कई वर्ष ज्ञान में चला, फिर मैने ज्ञान छोड़ दिया, बहुत विकर्म किये अब फिर से ज्ञान में आया हूँ, परन्तु मेरी खुशी नष्ट हो गई, पुरूषार्थ का उमंग उत्साह आता ही नहीं। अब मैं नये सिरे से पुरूषार्थ कैसे प्रारम्भ करूँ...?

उत्तर : काम वासना समस्त पुण्यों को नष्ट कर देती है। बाबा का बनकर उसका हाथ छोड़ देना माना भगवान को धोखा देना और इसका परिणाम यह होगा कि जन्म-जन्म धोखा मिलेगा और जो आत्माएं भगवान को समर्पित होकर फिर किसी मनुष्य को समर्पित होती हैं वे तो दुर्गति का मार्ग बनाती हैं। हर जन्म उन्हें उसका फल भुगतना पड़ेगा। आपने क्योंकि बहुत विकर्म कर लिये तो उनकी अत्यधिक सजा मानसिक रूप से प्राप्त होगी। यदि आप मानसिक पीड़ा से बचना चाहते हैं तो रोज 4 घण्टे यज्ञ सेवा में दो और जितने विकर्म किये, उससे 100 गुणा ज्यादा पुण्य कर्म करो।

जो कुछ आपने किया वे दृश्य मन पर तो अंकित हो गये अब योग में मुश्किल तो है परन्तु दो बार अव्यक्त मुरली पढ़ो। अमृतवेले उठो व उठकर पाँच स्वरूपों का अभ्यास कई बार करो। फिर क्लास में जाओ। जो सहज हो सकता है, वो करो, जो नहीं हो सकता है उसे छोड़ दो। आप एक स्वमान प्रतिदिन ले लो व उसे सारे दिन में 108 बार याद करो। इससे धीरे धीरे मन शक्तिशाली हो जाएगा। यह अभ्यास तीन मास अवश्य करें।

प्रश्न : मेरा मोह बहुत है। मुझे बच्चों से भी मोह है व वस्तुओं से भी बहुत मोह है। मैं जानती हूँ कि यह मोह मुझे भावुक बनाता है। मेरी बुद्धि इन्हीं में लगी रहती है। मैं मोह को जीतकर योगी बनना चाहती हूँ परन्तु समस्या यह है कि मुझे मेरा ही मोह अच्छा भी लगता है व इसे छोड़ने में डर भी लगता है।

उत्तर : यह बात सत्य है कि मनुष्य को अपना ही मोह अच्छा भी लगता है क्योंकि यह प्रेम के अति समीप है। अन्तर यही है कि प्रेम पवित्र है व मोह अशुद्धि है। प्रेम एक सद्गुण है और मोह बड़ा अवगुण। मनुष्य को मोह स्थान से भी होता है व वस्तुओं से भी, इसे ममत्व कहते हैं। मोह का कारण है मेरापन। मनुष्य का मोह उनमें ही होता है जिन्हें वह अपना समझता है। चाहे मेरे बच्चे, मेरा पति, मेरी माँ, मेरी पत्नि, मेरी कार, मेरी सम्पत्ति, मेरी सामाग्री आदि। यह भी सत्य है कि ये मेरी है व इनकी हमें सम्भाल भी करनी है पर क्योंकि अब कल्प का अन्त आ गया है और हमें सब कुछ छोड़कर परमधाम वापस जाना है। इसलिए अब मोह को छोड़ना अति हितकर है। यदि मोह नहीं जीता तो न तो योगी बन पायेंगे, न ईश्वरीय सुख ले पायेंगे और न ये अनुभव होगा कि बाबा मेरा है तथा आत्मा सदा सुखी नहीं बन पायेगी।

इस मेरे-पन को तो छोड़ना ही होगा। ऐसा अभ्यास करो कि मेरा कुछ भी नहीं है। ये बच्चे व अन्य सम्बंधी आत्माएं हैं। इस जन्म से पहले ये सब हमारे साथी नहीं थे और न अगले जन्म में रहेंगे। ये छोटा सा सफर है। ये सब आत्माएं हैं। जिस वस्तु से ममत्व हो, उसे देखकर यह भावना लाओ कि ये सब विनाशी हैं। हमारी भविष्य प्राप्तियों के समक्ष तो ये कुछ भी नहीं है। साधनों को यूज करो और न्यारे हो जाओ। जितना जितना अशरीरी पन का व आत्मिक दृष्टि का अभ्यास बढ़ायेंगे, उतना उतना ही निर्मोही बनते जायेंगे। साथ साथ स्वदर्शन चक्रधारी बनते चलें व इस स्मृति को बढ़ायें कि अब 5000 वर्ष का सफर पूर्ण हो रहा है, हमें सब कुछ छोड़कर घर जाना है।

प्रश्न : मुझे बहुत डर लगता है...मैं एक माता हूँ...विशेष रूप से ट्रेन से बहुत डर लगता है। तीन वर्ष से मैं ट्रेन में नहीं चढ़ी हूँ। मैं भय-मुक्त होकर ट्रेन में यात्रा करना चाहती हूँ, मुझे विधि बताओ।

उत्तर : भय भी एक महारोग है। मुख्य रूप से तो मनुष्य के पाप ही उसे भयभीत करते हैं। आपको ट्रेन से डर लगता है। इसका कारण पूर्व जन्म में ट्रेन से आपकी मृत्यु हुई है। मृत्यु के समय मनुष्य को तब बहुत भय होता है जब मृत्यु अति कष्टकारी होती है और यह अन्तर्मन में अंकित हो जाता है जो अगले जन्म में भी चलता है। पानी में डूबकर जिनकी मृत्यु हुई हो, उन्हें पानी से डर लगता है। ऊँचाई से गिरकर जिनकी मृत्यु हुई हो उन्हें ऊँची इमारतें देखकर भी डर लगता है। इस भय को अन्तर्मन से नष्ट करना है। कुछ अभ्यास आपके लिए लिख रहे हैं। कम से कम 21 दिन तक इनका अभ्यास करना। यह 21 दिन की साधना आपको मृत्यु के भय से मुक्त करेगी और आप रेल यात्रा का आनन्द ले सकेंगी। सबेरे आँख खुलते ही 21 बार याद करना – मैं सर्वशक्तिवान की सन्तान मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और निर्भय हूँ। रात को सोने से पूर्व यही अभ्यास करते करते सो जाना। इससे आपकी सोई हुई शक्तियाँ जागृत हो जायेंगी और भय लोप हो जायेगा। प्रतिदिन, सारे दिन में 21 बार ये अभ्यास करना कि मैं इस देह से न्यारी अजर अमर अविनाशी आत्मा हूँ। मैं मरती ही नहीं। मरता तो ये शरीर है। ये देह है भी विनाशी। सच्चे मन से स्वयं को अमर आत्मा महसूस करना। मृत्यु का भय समाप्त हो जाएगा।

स्वतंत्रता के ...

-पेज 9 का शेष

सकती। वे कहेंगे कि ऐसी सर्वांगीण स्वतन्त्रता तो मनुष्य का एक सुखद स्वप्न ही हो सकती है परन्तु यह स्वतन्त्रता सत्य नहीं हो सकती। परन्त मनुष्य को इस सृष्टि की वह अवस्था एवं ज़माना नहीं मालूम कि जब यहाँ सब प्रकार की स्वतन्त्रता सर्वोन्मुखी अथवा सार्वभौम रूप में सभी को सुख-शान्ति से प्रसन्न-वदन और प्रसन्न चित्त करती थी। मनुष्य को अतीत और अनागत के भेद नहीं मालूम क्योंकि मनुष्य के पास तो दो चर्म-चक्षुओं के सिवा वह आँख नहीं है कि जिससे गतकाल तथा भविष्य काल के वृत्तान्तों को या दृश्यों को देखा जा सकता है। वह दिव्य नेत्र केवल एक परमपिता परमात्मा शिव ही के पास है जो 'त्रिकालदर्शी' अथवा 'त्रिनेत्री' है।

अब उन्हीं परम कल्याणकारी, परम स्वतन्त्र, परमपिता परमात्मा ने हमें वह दिव्य चक्षु देकर दिखाया है कि उस मनोरम अतीत काल सतयुग और त्रेतायुग में सभी नर-नारी और जीव प्राणी पूर्ण रूपेण स्वतन्त्र थे। तब न तो उनकी देह रोग, बुढ़ापे या दुर्बलता के अधीन होती थी, न मनुष्यों को आर्थिक या मानसिक परतन्त्रता होती थी, न ही प्रकृति उन्हें किसी प्रकार का कष्ट या क्लेश देती थी। अत: उस काल के लोग सही मायनों में 'देवी-देवता' या 'जीवनमुक्त' थे। उक्ति प्रसिद्ध है कि 'प्रकृति उनकी दासी थी', 'यथा राजा तथा प्रजा' सभी दैवी मर्यादा के अनुसार बर्ताव करते थे, कोई भी निर्धन न था, उनकी कंचन-काया थी, अकाल मृत्यु नहीं होती थी, उन्हें किसी भी प्रकार का दु:ख न था।

प्रेम व सहानुभूति ...

-पेज 1 का शेष

रही हूँ। राजयोग के इस नियमित अभ्यास से मेरे अन्दर तनाव में कमी आयी है, खुशी के स्तर में वृद्धि हुई है तथा पारिवारिक जीवन भी पहले से ज्यादा खुशहाल हो गया है।

ओ.आर.सी के हैप्पी हेल्थ सेन्टर के मेडिकल ऑफिसर डॉ.दुर्गेश ने कहा कि केवल दवाईयों से रोगी ठीक नहीं हो जाता है। उचित दवाईयों के साथ ही साथ चिकित्सक, नर्स एवं फार्मासिस्ट का व्यवहार भी रोगी के उपचार में महत्वपूर्ण कारक होता है। इनके अच्छे व्यवहार से मरीज शीघ्र स्वस्थ हो जाता है। यदि हमारा व्यवहार एक दूसरे से अच्छा होगा तो हमारी खुशी में सौ गुनी ज्यादा वृद्धि होगी। ब्र.कु.लक्ष्मी ने कहा कि व्यस्त जीवन में राजयोग का नियमित अभ्यास अत्यंत आवश्यक है। इससे हमारे बिगड़े कार्य बन जाते हैं तथा हमारी आत्मोन्नति भी होती है। मंच संचालन ब्र.कु.रंजना ने किया।

यात्रा से परमात्मा ...

-पेज 3 का शेष

भगवान के हाथ का अंगूर

एक बार बाबा ने मुरली पूरी की और झोपड़ी के पास बगीचे में गये। मैं भी बाबा के साथ था। उन्होंने एक अंगूर तोड़कर मेरे मुख में डाल दिया। फिर पूछा, कैसा है? मैंने कहा, बाबा बहुत मीठा है। मन में भावना उठी, भगवान के हाथ से अंगूर मिले, उससे ज्यादा मीठा क्या होगा? एक बार मैंने बाबा से प्रार्थना की बाबा, मुझे आपके साथ फोटो खिंचवाना है। पहले बाबा ने कहा, बाबा फोटो नहीं खिंचवाते, फिर कहा, अच्छा चंद्रहास को बुलाओ। मैंने बुलाया। बाबा खड़े हो गये। बाबा ने चंद्रहास को डायरेक्शन दिया, फोटो निकालो। चंद्रहास ने फोटो निकाला। तीन फोटो निकाले, फिर बाबा चले गये, रूके नहीं। लेख के साथ छपा फोटो वही है जिसमें बनारस की सुरेन्द्र बहन तथा एक थाईलैंड का भाई भी है।

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

प्रथम सप्ताह

स्वमान -मैं ज्ञान चन्द्रमा की संतान शीतल योगी हूँ।

शीतल योगी आत्माएं अपनी शीतलता की छाया से सर्व को सदा सहयोग का आराम देते हैं। उनकी ओर हर एक को आकर्षण होता है कि हम इस आत्मा के पास जाएं, दो घड़ी भी शीतलता की छाया में सुख-आनंद का अनुभव करें।

योगाभ्यास -अ.मैं फरिश्ता ग्लोब पर खड़ा हूँ, मुझ पर एक तरफ से ज्ञानसूर्य शिवबाबा से शक्तियों की और दूसरी तरफ ज्ञान चन्द्रमा ब्रह्मा माँ से शीतलता की किरणें आ रही हैं। इन किरणों को स्वयं में समाकर मैं शीतल और शक्तिशाली बनता जा रहा हूँ।

अमृतवेले विशेष अभ्यास -उठते ही संकल्प करें कि बाबा मुझसे बहुत प्यार करते हैं...वे केवल और केवल मेरे लिए ही धरती पर आए हैं...उनकी निगाहें मुझ पर टिकी हुई हैं..वे मुझसे क्या चाहते हैं...? मैं उनकी चाहनाओं को अवश्य पूर्ण करूंगा...मैं जीऊंगा तो बाबा के लिए और मरूंगा तो बाबा के लिए...उनकी आशाओं को पूर्ण करना ही मेरे जीवन का एकमात्र ध्येय है..। रूहानी ड्रिल का अभ्यास करें।

धारणा -शीतलता। हम आत्माओं का स्वधर्म है शीतलता। संसार का ताप खत्म होगा हमारी स्थिति से।

शिवभगवानुवाच -शीतलता अर्थात आत्मिक स्नेह। आत्मिक स्नेह से ही विकारों की अग्नि में जली हुई आत्मा शीतल हो सत्यता को धारण करने के योग्य बनती है।

चिन्तन -कौन सी बातें हमारी आंतरिक शीतलता को नष्ट करती है? सदा शीतल कैसे रहें?

द्वितीय सप्ताह

स्वमान – मैं मन का मालिक हूँ।

मन को जब चाहें, जैसे चाहें, जितना समय चाहें, उतना एकाग्र कर लेना, इसको कहते हैं मन का मालिक बनना।

योगाभ्यास – इस सप्ताह योग में हम अपने भिन्न-भिन्न स्वरुपों पर स्वयं को एकाग्र करेंगे।

अ. मैं आत्मा भृकुटि सिंहासन पर विराजमान हूँ...मुझसे चारों ओर दिव्य प्रकाश फैल रहा है...अपने स्व स्वरुप पर स्वयं को एकाग्र करें।

ब. परमधाम में महाज्योति परमप्रिय शिव बाबा के दिव्य स्वरुप पर एकाग्र करें।

स. अपने सम्पूर्ण फरिश्ते स्वरुप पर स्वयं को एकाग्र करें...मेरा सम्पूर्ण स्वरुप कैसा है..डबल लाइट ...उपराम.....तेजोमय... सर्वगुणों और शक्तियों से सम्पन्न...।

द. ऐसी धुन लगायें कि जब हम नीचे देखें तो चारों ओर चमकती हुई आत्माएँ ही दिखाई दें और जब ऊपर देखें तो सर्वशक्तिमान ज्ञान सूर्य दिखाई दें। इसके अतिरिक्त संसार में हमें और कुछ भी नहीं दिखाई दे।

अमृतवेला – अ. अमृतवेले उठते ही, बाबा का बच्चे के रुप में आह्वान करें और उसे अपनी गोद में लेकर खिलायें, उससे मीठी-मीठी रुहरिहान करें। भगवान को अपना वारिस बनाने का सौभाग्य अभी ही हमें प्राप्त हुआ है...अभी उसे अपना वारिस बनायेंगे तो वह हमारा वर्तमान ही नहीं बल्कि भविष्य भी उज्जवल बना देगा...वह हमसे कौड़ी लेता है और बदले में विश्व की बादशाही देता है।

धारणा – जैसे बाबा नि:स्वार्थ भाव से सर्व मनुष्यात्माओं की सेवा करते हैं, वैसे ही हमें भी सर्व के लिए अपनी नि:स्वार्थ भावना बनानी है।

चिन्तन – एकाग्रता का क्या महत्व है? एकाग्रता के लिए कौन सी धारणाएँ आवश्यक है? कौन सी बातें हमारी एकाग्रता को भंग करती हैं? अपनी एकाग्रता को बढ़ाने के लिए क्या-क्या अभ्यास करें? एकाग्रता के लिए कहे गए बाबा के पाँच महावाक्य लिखें।

हमारा सूक्ष्म शरीर ...

-पेज 2 का शेष

की उपस्थिति में बेड पर सोये रहे और निरंतर उनका ट्रीटमेन्ट चलता रहा। नियमित रूप से थोड़े-थोड़े अंतराल पर इन्जेक्शन व दवाएं देते रहते थे।

दूसरी ओर अधिवेशन प्रारंभ हुआ। सदन के सदस्यों ने देखा कि चार्ल्स वुड अपनी कुर्सी पर बैठे हैं। वे कब सदन में आये और कब कुर्सी पर बैठे ये पता ही न चला और सबको आश्चर्य हुआ। पूरा अधिवेशन चला, तब तक सभी सदस्यों ने उन्हें कुर्सी पर बैठे हुए देखा। काफी दिनों के बाद उनकी तबियत में सुधार हुआ तब विधान सभा के सदस्यों से मिलना हुआ, तब उन्होंने सभा में हाज़िर न हो पाने के लिए अफसोस व्यक्त किया तब यह रहस्य उद्घाटन करते हुए। सदस्यों ने कहा – सर! आप ऐसा क्यों कह रहे हैं? विधान सभा के सत्र में तो आप हाज़िर थे। सबने आपको आपकी कुर्सी पर बैठे हुए देखा था, लेकिन आपने किसी के साथ बात नहीं किया क्योंकि आपकी तबियत खराब थी। चार्ल्स वुड यह बात मानने को तैयार नहीं थे और कहा कि – 'आपको कोई भूल हो रही है, उस दिन तो मैं बेड से उतरकर खड़ा भी नहीं हुआ था! उस दिन तो क्या कितने दिन तक मेरी वैसी ही स्थिति बनी हुई थी।

विधान सभा के सदस्यों ने कहा कि – 'लेकिन आप तो विधान सभा में हाज़िर थे, ये हम सबने देखा, क्या वो असत्य है? अरे! उस अधिवेशन की फोटो हमारे पास है, उस फोटो में आप अपनी कुर्सी पर बैठे हो यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है! उन्होंने वह फोटो चार्ल्स वुड को दिखाया। चार्ल्स वुड ने उसे ध्यान से देखा तो सचमुच वह अपनी कुर्सी पर बैठे हैं यह स्पष्ट दिखाई दिया!'

इस घटना में चार्ल्स वुड की अधिवेशन में जाने की तीव्र इच्छा होने के कारण उनकी चेतना स्थूल शरीर छोड़ सूक्ष्म शरीर के रूप में उस स्थान पर पहुंच गई थी और स्थूल शरीर जैसा ही रूप धारण कर वहां उपस्थित रही। चेतना द्वारा धारण किया हुआ पहले जैसा ही शरीर कैमरे की तस्वीर में अंकित हो गया था।

अमेरिका की विश्वविख्यात अभिनेत्री एलिजाबेथ टेलर को अपने सूक्ष्म शरीर का रोमांचक अनुभव हुआ था। एलिजाबेथ के शरीर का गम्भीर ऑपरेशन चल रहा था। उसे आपॅरेशन टेबल पर सुला कर एनेस्थेसिया दे मूर्च्छित कर दिया गया। ऑपरेशन लम्बे समय तक चला। ऑपरेशन के बाद डॉक्टर्स को ध्यान में आया कि एलिजाबेथ के हृदय का धड़कना बहुत कम हो गया है और उसकी नाड़ी भी बहुत धीमी पड़ गई है। डॉक्टर्स के अथक प्रयास के बाद उनकी स्थिति पूर्ववत हो सकी। वे जब होश में आई तब उसने आश्चर्यचकित करने वाला बयान दिया था। उसने कहा था – 'मैने मेरा ऑपरेशन स्वयं देखा है।' डॉक्टर्स ने कहा कि – 'आप तो उस समय बेहोश थी तो आपने यह ऑपरेशन कैसे देखा?' एलिजाबेथ ने कहा कि – मेरा शरीर टेबल पर सोया था और आप ऑपरेशन कर रहे थे तब मैं दूसरे शरीर से देख रही थी। मेरा वो शरीर हवा में उपर लटका हुआ हो ऐसा लग रहा था। मुझे शरीर का कोई भी भार अनुभव नहीं हो रहा था। जैसे कि मेरा शरीर फूल जैसा हल्का हो गया हो ऐसा मुझे महसूस हो रहा था। एलिजाबेथ की बात को स्पष्ट करने के लिए डॉक्टर्स ने पूछा कि उस वक्त क्या हुआ। एलिजाबेथ ने वो सभी बातें सुनाई जो उस समय घटित हुई थी। उसने कहा कि कोई साधन योग्य जगह पर नहीं रखा था तो उसके कारण मुख्य डॉक्टर्स गुस्सा हो गए थे और कौन से शब्द बोले थे वह भी बता दिया। संकट के समय कभी-कभी चेतना स्थूल शरीर छोड़ सूक्ष्म शरीर से उस स्थान पर तत्काल पहुंच कर दूसरा शरीर धारण कर संकट दूर कर देती है।

इसी प्रकार सूक्ष्म शरीर से मीलों दूर के भी दु:खी आत्माओं की आवाज़ सुन सकते हैं व उन्हें विकट परिस्थितियों से मुक्ति भी दिला सकते हैं। ये तब संभव होता है जब निरंतर हमारी चेतना की सूक्ष्म शक्तियों को उस दिशा में एकाग्र करने का अभ्यास हो व सूक्ष्म शक्ति मन-बुद्धि, कल्याण व श्रेष्ठ कार्य के प्रति सजग रहती। सत्य स्वरूप में स्थित होने पर रूह को राहत पहुंचती।

अहमदनगर। प्रसिद्ध समाजसेवी किरण बेदी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.उज्जवला। साथ हैं ब्र.कु.दीपक तथा ब्र.कु.आशा।

अजमेर। डाकू से राजयोगी बनने का अनुभव पुलिस कर्मियों को सुनाते हुए ब्र.कु.पंचम सिंह। साथ हैं ब्र.कु.आशा तथा ब्र.कु.नागेश।

अनूपशहर। जे.पी.ग्रुप के मालिक जय प्रकाश गौड़ को गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु.मीना। साथ हैं नगर पालिका अध्यक्ष सुधीर जी।

आंवला-बरेली। वरिष्ठ पत्रकार राकेश मथुरिया तथा ब्र.कु.रजनी सिलाई प्रशिक्षण कार्यक्रम में दीप प्रज्जवलित करते हुए।

अलकापुरी-बड़ौदा। वसंत मसाला के सेल्स एक्ज़ीक्युटिव एवम् डिस्ट्रीब्युटर्स की मीटिंग में विचार व्यक्त करते हुए ब्र.कु.डॉ.निरंजना। साथ हैं वसंत मसाला के एम.डी.ओमप्रकाश और ब्र.कु.नरेन्द्र।

बौध। लीली सेनापति, एस.डी.जे.एम बौध को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.यशोदा।

मतमतांतर भुलाकर चलें ब्रह्माकुमारीज के मार्गदर्शन में

धार्मिक प्रभाग के सम्मेलन में स्वामी धर्मवेश का उद्बोधन

ज्ञानसरोवर। वर्तमान अति धर्म ग्लानि के समय में जब मनुष्य एवं प्रकृति का स्वरूप भयानक संकट में पड़ गया है, हम सभी को चाहिए कि अपने सभी मतमतांतर को भूलकर सुसंगठित हो जाएं और ब्रह्माकुमारी संस्था को अपने लिए मार्गदर्शक के रुप मे चुनकर उसी के निर्देशन के अनुसार विकारों पर विजय प्राप्त करके फिर से सुख एवं शांति का साम्राज्य स्थापित करें।

उक्त विचार दिल्ली से पधारे स्वामी धर्मवेश सरस्वती जी ने ब्रह्माकुमारीज धार्मिक प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन के समापन सत्र को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होने कहा कि परमपिता परमात्मा शिव ने हमारे दादा लेखराज के तन का आधार लेकर 1937 को इस अविनाशी रुद्र यज्ञ की स्थापना की है। यही वो आबू पर्वत की पावन भूमि है जहां से रुद्र यज्ञ का पूरे विश्व के 140 देशो मे 9000 के लगभग सेवाकन्द्रों द्वारा इस अविनाशी रुद्र यज्ञ को या भगवान के इस पुनीत कार्य को पूरा करने मे तत्पर हैं। मानव जाति के कल्याण के लिए इस महान यज्ञ को पूर्ण करने के लिए हम सभी को संयुक्त प्रयास करना है। संसार का प्रत्येक व्यक्ति सुख शांति की प्राप्ति की कामना रखता है। मानव जाति के इस महानतम रुद्र यज्ञ को सफल बनाने के लिए आप सभी को एक आदर्श संस्था का नाम सुझा रहा हूँ वह संस्था है प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय। मेरे अनुभव में आज दुनिया भर में सर्वश्रेष्ठ संस्था है ब्रह्माकुमारी संस्था। यहाँ पर मैने मानव जीवन के मूल्यों की स्थापना होते हुए देखी है। इस संस्था में मैने पवित्रता, शांति, सत्य, प्रेम, सुख, आनंद एवं शक्ति आदि गुणों का विकास होते हुए देखा है। इससे आदर्श संस्था हमें दुनिया भर मे कहीं और नहीं मिलेगी। इसी के साथ-साथ हमें यह भी विदित होना चाहिए कि दूसरी सभी संस्थाएं मानवकृत हैं मगर ये हमारी संस्था ईश्वरकृत है। यानि परमात्मा शिव ने इस संस्था का निर्माण किया है स्वयं स्थापना की है, ऐसा मेरा विश्वास है। अत: मैं आत्मा मानव-कल्याण के लिए निमित्त अपनी प्रिय संस्था को अपनी धर्म मार्गदर्शक संस्था के रुप मे चुन रहा हूँ तथा इसमें आप सभी का समर्थन चाहता हूँ। इस पवित्र संस्था के पक्ष मे इसी के बैनर तले हम सभी कार्य करें ये संकल्प हम सबको लेना है आज। अब कल से अपने-अपने क्षेत्रों में पहुंचकर अपनी राय एवं संकल्प के अनुसार समस्त सृष्टि पर सत्य देवी देवता धर्म की स्थापना के लिए एवं विश्व को आगे बढ़ाने के लिए ब्रह्माकुमारी संस्था के सेवाकेन्द्र से निर्देश प्राप्त करते हुए इस अविनाशी रुद्र यज्ञ को पूरा करेंगे। और अपना जीवन सफल बनाएंगे। जब-तक इस विश्व पर ये विश्व कल्याणी देवी-देवता धर्म की स्थापना नहीं कर लेते तब-तक हम सुख की नींद नही सोएंगे ऐसा संकल्प करें।

ब्रह्माकुमारीज धार्मिक प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन में शोभायमान संतवृंद।

बिदर से पधारे ज्ञानी दरबार सिंह ने कहा कि दादा लेखराज जी ने कुछ आत्माओं के साथ जो संस्था आरंभ की आज वह दुनिया भर में ओम शांति का संदेश उजागर कर रही है। हमारे जीवन में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की

-शेष पेज 4 पर..

जनकल्याण के लिए चार सौ बहनों ने किया जीवन समर्पण

शांतिवन। आज के आर्थिक युग और भौतिक साधनों की ओर बढ़ रहे रूझान के बीच ब्रह्माकुमारी संस्था में एक साथ चार सौ बहनों ने आजीवन समाज सेवा का संकल्प लिया। इन बहनों ने परमात्मा शिव को साक्षी मानकर उनके मार्गदर्शन पर चलने की शपथ ली। शांतिवन के डायमंड हॉल में आयोजित इस भव्य कार्यक्रम में संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका समेत बड़ी संख्या में अन्य लोग थे। आजीवन समाज सेवा की शपथ लेने वाली इन बहनों में अधिकांश उच्च शिक्षित हैं और सभ्रांत परिवारों से हैं।

संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी ने कहा कि आज इन युवा बहनों ने विश्व को बदलने के संकल्प के साथ परमात्मा शिव को जीवन साथी मान लिया है। यह निर्णय लाखों, करोड़ों युवक-युवतियों के लिए

-शेष पेज 8 पर..

दादी हृदयमोहिनी, दादी रतनमोहिनी, दादी ईशु, ब्र.कु.मुन्नी, ब्र.कु.निर्वैर, ब्र.कु.करूणा, ब्र.कु.सरला तथा अन्य केक काटते हुए। साथ हैं जन-जन की आध्यात्मिक सेवा का संकल्प करते हुए समर्पित बहनें

भारत - वार्षिक 170 रुपये
तीन वर्ष 510 रुपये
आजीवन 4000 रुपये
विदेश - 2000 रुपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट माउण्ट आबू) द्वारा भेजें।

ओम शान्ति मीडिया
सम्पादक : ब्र.कु.गंगाधर
ब्रह्माकुमारीज, शांतिवन, तलहटी
पोस्ट बॉक्स नं. - 5, आबू रोड (राज.) 307510
Enquiry For Membership, Mob. No. - 09414006096
(M)- 9414154344, E-mail : mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkivv.org, webside:www.omshantimedia.info

प्रति

RNI NO RAJHN/2000/721, NEWS PAPER TO POST CONCSSIONAL REGISTRATION NO. RJ/SIROHI/9623/12-14, 12TH TO 14 TH, 22 ND TO 24TH POSTED TO SHANTIVAN POST OFFICE
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, सलाहाकार संपादक: कमल दीक्षित, प्रकाशक: ब्र.कु.करूणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज् मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ.) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट साल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।